श्री माहेश्वरी टाईम्स

अंक-7 दिसम्बर 2005 वर्ष - 1

RNI - MPHIN/2005/14721

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

अतिथि सम्पादक
मुरलीधर सारड़ा

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

संरक्षक
श्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

परामर्शदाता
श्री बंशीलाल बाहेती
श्री मदनलाल पलौड़
श्री आर.आर. बाल्दी
श्री राजेन्द्र ईनाणी
श्री गोपाल गोदानी (भोपाल)
श्री ओमप्रकाश भराणी

सम्पादकीय सलाहकार
श्री बंशीलाल भूतड़ा 'किरण'
श्री गोविन्द मालू
श्री दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा)

सम्पादन सहयोग
रामनिवास झंवर
प्रमोद मंत्री
शैलेष राठी
अशोक माहेश्वरी
दिलीप झंवर

कार्यालय -
श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी,
उज्जैन (म.प्र.) 456001
दूरभाष -0734- 2551307, 2559389
3094855 मोबाईल - 94250-91161
E-Mail : sri_maheshwaritimes@yahoo.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

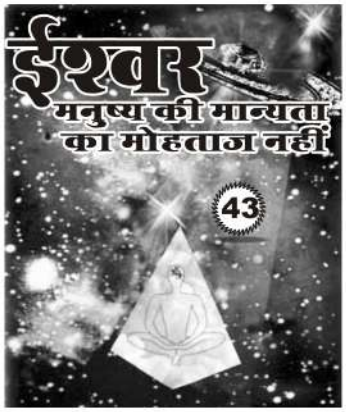

समाचार	8-15
सूली पर खिले फूल	16
प्रार्थना अर्थात ईश्वर से संवाद	21
कन्या सुरक्षा समाज की जरूरत	23
साक्षात्कार कैसे करें तैयारी	25
प्ले स्कूल फॉर किड्स	27
विवाह समझ और धैर्य का संतुलन	29
सौंदर्य को नया रंग देते मोती के जेवर	34
न्याय जगत् के दैदीप्यमान नक्षत्र जितेन्द्र माहेश्वरी	35
माहेश्वरी समाज के पथप्रदर्शक बंशीलाल भूतड़ा 'किरण'	36
क्या सोचते हैं युवा प्रेम और..	38
तीर्थाटन	41
मनोरोग लक्षण एवं उपाय	45
संकेत सितारों के	49
शादी-ब्याह	51
श्रद्धांजलि	52

'श्री माहेश्वरी टाईम्स' में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) रहेगा।

अलविदा 2005

सन् 2005 हमसे विदा ले रहा है। विदाई के क्षणों में अक्सर पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स इस वर्ष में उस नन्हें परिन्दे की तरह आपके आंगन में पहुँचा है जिसने अभी-अभी जन्म लेकर पंखों को फड़फड़ाना सीखा है। इसके जन्म में उन सभी की भावनाओं की गर्माहट यश की भीगी है, जिन्होंने सदैव सहयोगी बनकर हाथ थामा। अपनों के लिए अपनी पत्रिका के उद्देश्य को लेकर हम आगे बढ रहे हैं। अपेक्षा यही है कि आपका यह आशीर्वाद इसी तरह मिलता रहे। पत्रिका के माध्यम से हमने समाज को अपने इतिहास और संस्कृति से अवगत कराने का प्रयास किया है तो नए समाज के सामने भी आईना रखने की कोशिश की है। इस दौर में हम जहां अपने बुजुर्गों के साथ धर्म-कर्म की बातें करते रहे हैं तो युवाओं के लिए रोजगार मार्गदर्शन और जीवन शैली पर विचारों का आदान-प्रदान करने में सफल हुए हैं। समाज के सितारों की रोशनी से इसे जगमगाया है तो समाज के लिए प्रेरणा और आदर्श बने व्यक्तित्वों की रंगोली भी हमने सजाई है। महिलाओं के साथ घर-परिवार की बातों में साझेदारी निभाई और बच्चों के ज्ञानवर्धन का भी प्रयास किया। समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए पर्व और त्यौहारों की जानकारी देने के साथ ही उनके औचित्य और विज्ञान पर भी चर्चा की है। तीर्थ यात्रा का क्रम भी निरन्तर जारी रखा है। हमारा प्रयास रहा है कि यह पत्रिका घर-परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए अपनी पत्रिका बन सके। इसमें हम कितने सफल हुए यह तो आप ही तय करेंगे किन्तु हमें विश्वास है कि आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने में हमने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

इस अंक में भी आप उन सभी विषयों पर सामग्री पाएंगे जो आपको प्रिय हैं। विवाह-प्रसंग पर केन्द्रित यह अंक भी आपको उतना ही पसंद आएगा। इस अंक में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामपाल सोनी की शून्य से शिखर की यात्रा आपको आंदोलित करेगी तो श्री बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' का आदर्श जीवन समाजसेवा की प्रेरणा देगा। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जितेन्द्र माहेश्वरी का जीवन वृत्त, जीवन को सिद्धान्तों के प्रति आदरभाव से भर देगा। इस अंक में जाड़े के मौसम के साथ अन्य समसामयिक पठनीय सामग्री भी सहेजी गई है। साथ ही अनेक विचारोत्तेजक और ज्ञानवर्द्धक आलेखों से सजा यह अंक पूरी श्रद्धा के साथ आपको समर्पित है। इस अंक के बारे में अपने विचारों से हमें अवगत कराना न भूलें।

धन्यवाद

- पुष्कर बाहेती

सम्पादक

गृहस्थ धर्म

सनातन परम्परा हमें व्यवस्थित जीवन और समाज देती है। हमारा जीवन संसार के सभी सुखों से परिपूर्ण हो और अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए हम मोक्ष को प्राप्त करें, इसके लिए चार आश्रम धर्मों की व्यवस्था दी गई - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। इनमें गृहस्थ धर्म या आश्रम को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि गृहस्थ ही शेष तीनों आश्रमों का आश्रय भी है जिसकी शुरुआत विवाह संस्कार के साथ होती है। ब्रह्मचर्य आश्रम विद्या प्राप्त श्रेष्ठ नागरिक गढ़ने के लिए है तो गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ नागरिकों से अच्छे समाज की रचना करने के लिए है। चाणक्य ने कहा है-**माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित:।** अर्थात वह माँ दुश्मन और पिता बैरी के समान है जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं दिलाते। उचित शिक्षा-दीक्षा से हमारे भीतर उत्तम गुणों का विकास होता है। गुणी नागरिकों से ही अच्छे समाज की रचना की जा सकती है। गृहस्थ आश्रम का वही पालन कर सकता है जो सद्गुणों से भरा हो। गृहस्थ का सबसे प्रमुख गुण है सदाचार। शास्त्रों में कहा गया है गृहस्थ को सत्य और न्यायपूर्वक धनोपार्जन करके आत्म कल्याण के लिए देवताओं, पितरों और यावन्मात्र प्राणियों की निष्कामभाव से सेवा करनी चाहिए। इसके लिए एक गृहस्थ को पांच महायज्ञ करना चाहिए- ब्रह्मयज्ञ अर्थात वेद और धर्मग्रंथों का पठन-पाठन, पितृयज्ञ अर्थात श्राद्ध और तर्पण के माध्यम से अपने पूर्वजों को याद रखना, देवयज्ञ अर्थात हवन-पूजन कर परमात्मा को स्मरण करना, भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव) अर्थात सम्पूर्ण प्राणी मात्र के जीवन के लिए अन्न-जल देना तथा मनुष्ययज्ञ अर्थात अतिथियों की सेवा करना।

धर्मग्रंथ हमें ज्ञान देते हैं, पूर्वजों से हमें अनुभवों का लाभ मिलता है, देव-पूजन से मन और बुद्धि में स्थिरता आती है, बलिवैश्वदेव और तर्पण करना अर्थात सम्पूर्ण विश्व को जीवनदान देना है, क्योंकि अन्न-जल से ही सब प्राणी जीते हैं। तर्पण से सूर्य, जल को शोषित कर वर्षा के रूप में सभी को बांटता है और बलिवैश्वदेव में अग्नि में दी गई आहूति भी इसी तरह सम्पूर्ण मात्र को जीवन प्रदान करती है। मनुष्य यज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा से हमें व्यवहारिक ज्ञान मिलता है। शास्त्र कहते हैं गृहस्थ सदा अपने कर्तव्य पालन में लगा रहे और काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, दम्भ और नास्तिकता आदि दुर्गुणों का त्याग कर सदा मन और इंद्रियों को संयम में रखते हुए सदाचार में स्थित रहे। भारतीय समाज में विवाह नर-नारी के बीच सहजीवन का समझौता नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत को सुखी और सम्पन्न बनाने का संस्कार है। यह यौनतुष्टी का माध्यम नहीं, सृष्टि-संसार के उन्नयन और विकास की प्रक्रिया है। इसलिए गृहस्थ को धर्म कहा गया है। विवाह के इस मौसम में जो युवा गृहस्थ धर्म में प्रवेश कर रहे हैं, उन्हें अपने कर्तव्यों को अपनी परम्परा के आईने में समझना होगा तभी वे व्यापक अर्थों में सुख और समृद्धि प्राप्त कर जीवन को पूर्णता दे पाएंगे।

- मुरलीधर सारड़ा

श्री मुरलीधर सारड़ा उन युवा उद्यमियों में अग्रणी हैं जिन्होंने समय की नब्ज़ को पहचाना और अपने उद्यम को नई दिशा देकर सफलता को समय के पूर्व हासिल कर लिया। 'कॉस्मो वर्ल्ड' पत्रिका एक ऐसा प्रकाशन है जिसने उद्योग जगत को अपनी ओर आकर्षित किया है। पूना से प्रकाशित यह पत्रिका सम्पूर्ण देश में अपना स्थान बना चुकी है। अभियांत्रिकी और प्रबंधन की उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रकाशन क्षेत्र में नई विचारधारा के साथ आए श्री सारड़ा समाज सेवा और धर्म-अध्यात्म के क्षेत्र में भी सतत् सक्रिय हैं।

मुरलीधर सारड़ा
अतिथि सम्पादक

क्लासिफाइड

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

कहते हैं एक से भले दो...
उद्योग-व्यापार में सफलता के लिए माहेश्वरी समाज एकजुट हो, इसके लिए यह हमारा विनम्र प्रयास है। विज्ञापन के इस पृष्ठ के माध्यम से हम माहेश्वरी समाज के उद्यमियों और व्यापारियों को एक दूसरे के करीब लाना चाहते हैं।

मात्र 250/- रु. में

विज्ञापन देकर आप अपने उद्योग, व्यापार, उत्पाद आदि से पूरे समाज को परिचित करा सकते हैं ताकि हम एक दूसरे की सफलता में सहायक बन सकें। विज्ञापन सामग्री भुगतान चेक या ड्राफ्ट के साथ माह की 20 तारीख तक संपादकीय कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।
चेक-ड्राफ्ट श्री माहेश्वरी टाईम्स, उज्जैन के नाम देय।

- संपादक

Wanted Marketing Executive All Over India

COSMO WORLD IS A LEADING TENDER / JOB / AUCTION WEEKLY PUBLISHING 20 JOURNALS ON WEEKLY BASIS FROM PUNE FROM LAST 5 YEAR FOR EXPANSION OF OUR MEDIA HOUSE WE REQUIRE MARKETING EXECUTIVE ALL OVER INDIA.

IF YOU HAVE PASSION FOR WORK & CREATIVE IDEAS WITHIN YOU CONTACT US.

COSMO WORLD

Tender/Job Dedicated Bulletin
"Cosmo Bhavan" A-1/7, Bhosale Paradise, Range Hill Road, Pune - 411 020
Tel. : 020-25535607, Mobile : 9823081160
E-mail : cosmo@pn3.vsnl.net.in
Website : www.cosmoworld.com

घर बैठे ज्योतिष मार्गदर्शन

जीवन की किसी भी समस्या पर ज्योतिष विषयक अचूक सलाह तथा शास्त्रीय पद्धति से उपासना, उपाय व ग्रह रत्न का मार्गदर्शन। अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान के साथ अपना प्रश्न लिख भेजें। 100/- का मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजें। घर बैठे उत्तर प्राप्त कीजिए। व्यापारी बन्धु व्यापार वृद्धि के लिए शास्त्रीय पद्धति से संस्कारित श्रीयंत्र, कुबेर यंत्र व कनकधारा यंत्र के लिए सम्पर्क करें।

चन्द्रशेखर डांगरा
भंडारे बिल्डिंग, विट्ठल चौक,
हुपरी - 416203 (कोल्हापुर) महाराष्ट्र
फोन - 0230-2450963, 2452563
मो. 9890940963

शून्य से शिखर का इकॉनामी-संस्करण
(18 माह में चौथा संस्करण)

'' कैसा विलक्षण भाग्य पाया है - कोकिला बेन ने। जामनगर के एक पोस्ट मास्टर के यहाँ जन्मी कोकिला बेन ने औपचारिक शिक्षा केवल नौवीं क्लास तक प्राप्त की। आधा जीवन अपने पति धीरुभाई के साथ खाड़ी देश या मुंबई की चाल में गुजारा। प्रौढ़ावस्था में केवल इसलिए अंग्रेजी सीखी कि पति-पुत्र के कारोबार-वार्तालाप सुन सके। पति के जीवनकाल में कोकिला बेन ने कभी रिलायंस के कारोबार में हस्तक्षेप नहीं किया पर उनके निधन के बाद पुत्रों में विवाद हुआ तो वे दोनों के बीच 'आयरन-लेडी' बनकर खड़ी हो गईं ....''

प्रकाश वियाणी की बहुचर्चित पुस्तक 'शून्य से शिखर' (संशोधित अपडेटेड चौथे संस्करण) का यह अंश दर्शाता है कि भारतीय उद्योग जगत कितना भी आधुनिक हो जाए, भारतीय उद्योगपति कितने भी 'मॉडर्न' हो जाएं इसकी जड़ें परंपराओं से जुड़ी हुई हैं। बिजनेस फैमेली में आज भी 'राजमाता' या 'राजगुरु' के लिए जगह है।

'शून्य से शिखर' पढ़ें और जानें भारतीय उद्योग जगत का 'अनदेखा चेहरा'
शून्य से शिखर के इकॉनामी संस्करण (पृष्ठ 320) की प्राप्ति के लिए- रु. 150/- का ड्राफ्ट/चेक/एम ओ भेजें
श्री माहेश्वरी टाईम्स माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2551307, 2559389, 94250-91161

प्रत्येक जिले में हींग, सौन्दर्य प्रसाधन, शहद बिक्री हेतु स्टाकिस्ट चाहिये।
कम पूंजी में कार्य प्रारम्भ करके लाभ कमाएं
ऐपेक्स हर्बल ग्रामोद्योग संस्थान
अलीगढ़ रोड, हाथरस (उ.प्र.)
फोन - 09412731254

माँ कुलदेवी - 5

झीण माताजी

■ मनोज पाराशर, पो.झीणधाम (सीकर)

झीण माताजी - माहेश्वरी समाज की सोढानी खांप की कुल माता है। इसके अलावा सोमानी, जाजू, बजाज, काबरा, राठी, बिड़ला, तोषनीवाल, छापरवाल, तापड़िया, खांपें वाले भी इन्हें मानते हैं।

झीणमाता का भव्य अति प्राचीन मन्दिर राजस्थान के सीकर जिले के 'झीणधाम' में स्थित है। श्री झीणमाताजी दुर्गा की नौ देवियों में प्रथम जयन्ती देवी का अवतार हैं। यह मन्दिर कई हजार वर्ष पुराना है। झीणमाताजी के सम्बन्ध में राजस्थान में लोकोख्यान प्रसिद्ध है कि यहाँ हर्ष और झीण ने कठोर तपस्या की थी। यह मंदिर केवल पूर्व दिशा में खुला हुआ है, बाकि तीनों दिशाओं में यह पर्वत शृंखलाओं से घिरा हुआ है। मंदिर में स्थित माता की प्रतिमा अष्ट भुजाओं वाली है और सामने घृत और तेल के दो अखण्ड दीपक कई हजार वर्षों से प्रज्जवलित हैं।

इस मंदिर का प्राचीन इतिहास है। इसके इतिहास के बारे में पुजारी कमलकुमार पाराशरजी ने बताया कि मुस्लिम बादशाह औरंगज़ेब सेना के साथ कई मंदिरों को खंडित करते हुए यहाँ भी इसी उद्देश्य से आया था परंतु माताजी के चमत्कार के कारण ऐसा कुछ कर नहीं पाया और भवनेश्वरी माताजी मंदिर के यहाँ पर स्थित मधुमक्खी के छत्ते द्वारा आक्रमण कर सेना को वापस जाने को मजबूर होना पड़ा। इस चमत्कार से औरंगज़ेब भी हतप्रभ रह गया। बाद में उसने यहाँ पर छत्र चढ़ाकर अखंड ज्योत जलाई जो आज भी जल रही है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ पर कभी ताले नहीं लगे हैं। मंदिर पर कई मुस्लिम परिवार भी आस्था रखते हैं तथा सेवा करने आते रहते हैं।

यहाँ पर कई धर्मशालाएँ हैं जहाँ पर यात्रियों के लिए निःशुल्क सेवाएँ उपलब्ध रहती हैं। भोजन के लिए शुद्ध शाकाहारी ढाबा भी उपलब्ध है। मंदिर में पूर्व सूचना देने पर न्यूनतम दर पर भोजन व्यवस्था की जाती है तथा बर्तनों का किराया नहीं लिया जाता है।

मंदिर के बारे में पुजारी बताते हैं कि यहाँ पर पहले कभी बलि एवं मदिरा का भोग लगाया जाता था परंतु आजकल यह नहीं होता है।

मंदिर के पुजारी श्री कमलकुमारजी पाराशर, श्री पूरणमलजी पाराशर, श्री रामअवतारजी पाराशर, श्री मातादीनजी तथा श्री दिनेशजी हैं। वर्तमान में श्री कमलकुमारजी पाराशर पूजा-अर्चना कर रहे हैं। हर शरद पूर्णिमा को पुजारी बदल जाते हैं। यहाँ के मंदिर का दूरभाष - 01576-227156 है।

- आरती व प्रसाद -

झीणधाम में माँ झीण की आरती तीन समय होती है -

प्रथम आरती - मंगला आरती सुबह 4 बजे होती है जिसमें माँ को सम्पूर्ण वाद्य यंत्रों द्वारा जगाया जाता है।

द्वितीय आरती - प्रातः 8 बजे मुख्य आरती के पश्चात भात (चावल) प्रसाद लगाकर यात्रियों में बांटा जाता है। इस प्रसाद को ढाई किलो चावल, आधा किलो घी, आधा किलो चीनी के साथ झीण कुण्ड के अमृत समान जल से बनाया जाता है।

तृतीय आरती - सायं 7 बजे आरती पश्चात दुर्गा सप्तशती के मंत्रोच्चारण के पश्चात चावल का भोग लगाया जाता है। (आरती के समय में फेरबदल सूर्य उदय व अस्त होने के अनुसार किया जाता है)

- कैसे पहुँचे -

झीणधाम राजस्थान के सीकर जिले में वाया कोछोर (सीकर) से 30 किलोमीटर दक्षिण की ओर जयपुर हाईवे पर गौरियां जंक्शन से 15 किलोमीटर दूर अरावली गिरी में स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए सड़क मार्ग से जाना होता है लेकिन रेलमार्ग से पहुंचने के लिए गौरियां रेल्वे स्टेशन उतरना होता है। रेल या वायु मार्ग द्वारा जयपुर पहुंचकर यहां से बस या स्वयं के निजी वाहन द्वारा झीणधाम पहुंचा जा सकता है।

बच्चों से पहले स्वयं संस्कारित हों-श्री मूंदड़ा

लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर चिंतन शिविर सम्पन्न

सूरत। जिला माहेश्वरी सभा द्वारा बीसवीं सदी के दो महान विचारक एवं चिंतक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर आयोजित चिंतन शिविर 2005 को अभूतपूर्व सफलता मिली। श्री गिरधर गोपाल मूँदड़ा ने अध्यक्षीय भाषण में आमंत्रित वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय दिया। उनका मत था कि हमें बच्चों से पहले स्वयं संस्कारित होना होगा क्योंकि बच्चे हमारी बातों का नहीं, हमारे कृत्यों का अनुसरण करते हैं। ये कच्ची मिट्टी के समान हैं जिन्हें दिशा या आकार देकर सुंदर पात्रों में ढालना हमारी जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के महामंत्री श्री श्याम सोनी ने कहा कि बालक के व्यक्तित्व विकास के विश्वविद्यालय थे दादा-दादी की गोद जो संयुक्त परिवारों में सहज ही बच्चों को प्राप्त थी किंतु आज विघटित एवं एकल परिवारों में बच्चे आयाओं की गोद में पलते हैं एवं वृद्ध माता-पिता वृद्धाश्रमों में भेज दिए जाते हैं। मुंबई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, चिंतक और पत्रकार श्रीमती कल्पना गगरानी ने रिश्तों की डोर कमजोर होने की बात को स्वीकार करते हुए कहा कि अभी अपने समाज में पानी सिर के ऊपर नहीं निकला है। हमारा पतन उतना नहीं हुआ है किंतु एक परिवर्तन की प्रक्रिया से हम अवश्य गुजर रहे हैं। हमें इस परिवर्तन के दौर को पहचानकर उसे सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हुए हमारे युवाओं को आवश्यक स्वतंत्रता देते हुए उनकी दिशा को थोड़ा सा मोड़ देना होगा।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल के आगामी सत्र के लिए मनोनीत अध्यक्षा श्रीमती विमला साबू ने बढ़ते हुए तलाक-सहनशीलता की कमी विषय पर बोलते हुए पति-पत्नी में बढ़ते हुए अहम पर चिंता व्यक्त की एवं उसे संयमित रखते हुए सहनशीलता बढ़ाने की सलाह दी। शिविर का उद्घाटन आमंत्रित अतिथियों द्वारा भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण द्वारा किया गया। ममता राठी, नीलू साबू व शैला ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

माहेश्वरी सभा द्वारा प्रतिभाओं का सम्मान

कोलकाता। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में निवास करने वाले स्वजातीय परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों को प्रतिभा सम्मान समारोह में रजत पदक एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री डी.सी.बच्छावत (वाणिज्य कर आयुक्त पश्चिम बंगाल सरकार) ने किया। विशेष रूप से उपस्थित श्रीकृष्णदास जाजू स्मारक ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी श्री दामोदरलाल बंग ने सभागार के ट्रस्ट को जानकारी दी। सम्मानित अतिथि श्री जगमोहनदास पलोड़ ने वैश्वीकरण युग में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया, महासभा के संयुक्त मंत्री श्री अशोक द्वारकानी ने स्वयं एवं महासभा की ओर से शुभकामना प्रेषित की। प्रमुख वक्ता श्री विशंभर नेवर ने युवाओं को समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने हेतु कहा। समारोह अध्यक्ष श्रीयुत वेणुगोपाल बांगड़ ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए प्रतिभाओं के सर्वांगीण विकास हेतु समाज से आग्रह किया। आरंभ में समारोह के प्रायोजक नृसिंहदास लक्ष्मीदेवी मूंदड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं प्रदेशाध्यक्ष श्री जगदीशचंद्र एन. मूंदड़ा ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए आगंतुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर उपस्थित सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री गोविंद सारडा ने चार वर्ग के विशिष्ट प्रतिभाओं को स्वर्ण पदक प्रदानकर सम्मानित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री कौशल मोहता, अंजनी सोमानी, राजेश बियाणी, प्रकाश काबरा, विनोद राठी, मदनमोहन राठी, पवन चांडक, कुलदीप गट्टानी एवं श्रीमती सुधा मूंदड़ा का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन संयोजक श्री देवकिशन करनानी ने किया।

इस स्तम्भ के लिए पाठक अपने क्षेत्र के समाचार भेज सकते हैं। समाचार संक्षिप्त, तथ्यपरक और सारगर्भित हो। आवश्यक पाए जाने पर ही फोटो प्रकाशित किए जाएंगे। -संपादक

दीपावली मिलन एवम् अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

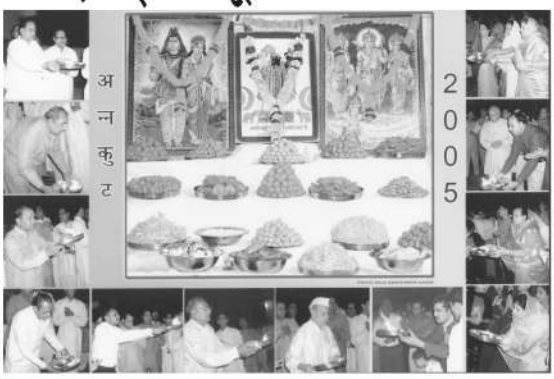

नागदा। श्री माहेश्वरी समाज द्वारा स्थानीय माहेश्वरी भवन में दीपावली-मिलन समारोह व अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महेश के पूजन-अर्चन से हुआ। तत्पश्चात भगवान महेश को भोग व आरती की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सदस्य श्री मदन पलौड़ (उज्जैन), विशेष अतिथि माहेश्वरी उज्जैन जिला महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश लड्ढा (उज्जैन) एवम् श्री माहेश्वरी उज्जैन जिला महासभा के कार्यकारी सदस्य श्री गोपाल तिलोटिया (उज्जैन) थे। मुख्य अतिथि द्वारा समाज के वरिष्ठ श्री गोविंद मोहता का उज्जैन जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर पुष्पहारों से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा आयोजित शरद उत्सव पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पुरस्कार मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा वितरित करवाए गए। जिला सचिव श्री सतीश बजाज को लायंस प्रेसिडेंट अवार्ड मिलने पर बधाइयाँ दी गईं। समारोह में समाज के वरिष्ठ श्री चांदमल बीसानी, श्री कालूराम गगरानी, श्री प्रकाशचंद्र नवाल, श्री मदनलाल मोहता, श्री बृजमोहन मूंदड़ा, श्री नरेंद्र राठी, श्री राधेश्याम राठी, श्री राजेश माहेश्वरी, श्री प्रवीण राठी, श्री अक्षय गुप्ता, श्री राजू माहेश्वरी, श्री राधेश्याम काबरा, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती उमा डांगरा, माहेश्वरी सोश्यल ग्रुप के अध्यक्ष श्री अशोक बीसानी के अलावा कई समाजबंधु उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन सोश्यल ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष घनश्याम राठी द्वारा किया गया।

माहेश्वरी क्लब दिल्ली का दीपावली मिलन समारोह

नई दिल्ली। माहेश्वरी क्लब दिल्ली द्वारा दीपावली मिलन समारोह 2 नवम्बर, 2005, बुधवार सायं 7.00 बजे फूड कोर्ट बनारसी दास चांदीवाला स्टेट में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर बंधु-बांधव से मिलन एवं लक्की ड्रॉ के साथ स्वरूचि भोज का 800 से भी अधिक लोगों ने आनंद उठाया। इस अवसर पर सदस्यों ने एक दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दी।

लक्की ड्रॉ कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अनुराग डागा का विशेष सहयोग रहा। श्रीमती सजल डागा (तीज त्योहार मंत्री) तथा श्रीमती निधि खण्डेलवाल (उप तीज त्योहार मंत्री) की कड़ी मेहनत के कारण ही इस पूरे कार्यक्रम का इतना सफल संचालन हो सका।

आने वाले सभी सदस्यों का स्वागत अध्यक्ष श्री राजकुमार डागा, उपाध्यक्ष श्री दीपक राठी व श्री रमेश बांगड़ ने किया। भोजन की पूर्ण व्यवस्था क्लब की मंत्री श्रीमती मधुरिका मूंदड़ा की देख-रेख में हुई। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में श्री प्रभाकर काबरा, श्रीमती सुधा डागा, श्रीमती वीणा जाजू, श्री अमित मूंदड़ा, श्री अशोक डागा, श्री ओमप्रकाश बाहेती का विशेष सहयोग रहा।

श्री टावरी जिलाध्यक्ष, श्री कलंत्री सचिव एवं राठी प्रचार मंत्री चुने गये

जिलाध्यक्ष

सचिव

प्रचार मंत्री

अमरावती। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अंतर्गत अमरावती जिला माहेश्वरी सभा के त्रैवार्षिक चुनाव में सभी पदाधिकारी निर्विरोध चुने गये। विगत 35 वर्षों से शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत तथा 15 वर्षों से जिला माहेश्वरी सभा के मंत्री के रूप में सफलतापूर्वक अपना दायित्व निर्वहन कर रहे श्री श्यामसुन्दर टावरी का नाम अध्यक्ष पद हेतु प्रस्तावित होने पर जिले के सभी 12 तालुकों के पदाधिकारियें ने अनुमोदन किया। चुनाव अधिकारी प्रकाशी राठी ने टावरीजी को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किये जाने की घोषण की। श्री टावरी को लगातार तीन वर्ष से उत्कृष्ट जिला सचिव तथा प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति सदस्य के रूप में पुरस्कृत किया जाता रहा है। अमरावती विश्वविद्यालय ने भी उत्कृष्ट सेवा गौरव पुरस्कार देकर सम्मानित किया था। जिला सभा सचिव पद पर श्री जगदीश कलंत्री भातकुली का सुर्वानुमति से चयन किया गया। विगत दस वर्षों से वे सामाजिक, आध्यात्मिक कार्यों में संलग्न है। जिला प्रतिनिधि राधेश्याम राठी, मोर्शी का सर्वानुमति से चयन किया गया। वे अत्यंत सरल, सौम्य स्वभाव के धनी है।

अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष डॉ.रमेश सारडा, दामोदर राठी, सह-सचिव प्रकाश तापडिया, अशोक मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष विजय चांडक, जिला प्रतिनिधि सदाकुंवर मूंदड़ा, युवा प्रतिनिधि संजय राठी को चुना गया। कार्यकारिणी सदस्यों में रामेश्वर बाहेती, श्यामसुंदर लड्ढा, श्याम राठी, सुरेंद्र चांडक, अशोक राठी, जयप्रकाश मूंदड़ा, नारायणदास पनपालिया, प्रेमचंद मूंदड़ा, ठाकुरदास साबू, श्यामसुंदर राठी का समावेश है। प्रदेश प्रतिनिधि हेतु नवकिशोर राठी, विजय करवा और प्रकाश राठी, श्यामसुंदर टावरी को चुना गया। प्रचार मंत्री पद पर अशोक राठी की नियुक्ति की गई। चुनाव अधिकारी का कार्यभार प्रकाश राठी ने संभाला। इस अवसर पर सभी तालुके के अध्यक्ष व सचिव मौजूद थे।

शरदोत्सव पर गरबा रास में एकता के रंग बिखरे

रतलाम। शरद-पूर्णिमा की दूधिया चाँदनी में गरबों की आकर्षक प्रस्तुतियों को देख हर एक रोमांचित हो उठा। सामाजिक एकता के अनूठे रंग श्री माहेश्वरी समाज के युवक-युवतियों ने बिखेरे। गरबा नृत्य के माध्यम से माँ की आराधना कर उन्होंने पूर्णिमा पर्व को सार्थकता देते हुए भाईचारे का प्रकाश फैलाया। श्री माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा श्री माहेश्वरी भवन पर आयोजनत कार्यक्रम में श्री विजयकुमार सोमानी मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता श्री लक्ष्मीनारायण मालपानी ने की।

गरबा रास स्पर्धा डीजे साउंड पर तीन चरणों में हुई। जूनियर, सीनियर वर्ग के 5-5 एवं युगल वर्ग के 2 विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। गरबा परिसर में आकर्षक रंगोली का निर्माण भी किया गया। इस मौके पर समाज के सर्वश्री कन्हैयालाल सारडा, कैलाश मालपानी, माधव काकानी, जगदीश सोनी, आशीष काबरा, सुनील मालपानी, सतीश बाहेती, आशीष काबरा, विनोद तोषनीवाल, गोपाल मूंदड़ा, गोविंद तोषनीवाल, नंदकिशोर भंसाली प्रमुख रूप से उपस्थित थे। संचालन राजेश चौखड़ा ने एवं आभार प्रशांत झंवर ने किया।

माहेश्वरी क्लब को बेस्ट सोश्यल सर्विस का अवॉर्ड

दिल्ली। एम.टी.एन.एल. परफेक्ट हेल्थ मेला के डायरेक्टर श्री अनिल जाजू ने इस अवसर पर माहेश्वरी क्लब को बेस्ट सोश्यल सर्विस का अवॉर्ड दिल्ली सरकार के मंत्री श्री मंगलराम सिंघल के करकमलों से प्रदान किया। माहेश्वरी क्लब दिल्ली द्वारा इस वर्ष भी एम.टी.एन.एन. परफेक्ट हेल्थ मेला-2005 में हिस्सा लिया गया। माहेश्वरी क्लब तथा हार्ट केयर फाउंडेशन ऑफ इण्डिया ने निःशुल्क एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। मुम्बई के श्री विपिन भाई शाह ने लोगों को एक्यूप्रेशर के बारे में जानकारी दी। हजारों की संख्या में लोगों ने इस पद्धति से इलाज करवाया। कार्यक्रम के सफल संचालन में डॉ. वीणा जाजू तथा श्रीमती मंजूश्री चाण्डक का विशेष सहयोग रहा।

माहेश्वरी क्लब ने मेले के दौरान निःशुल्क जल की भी व्यवस्था की, जिसमें दस दिनों तक प्रतिदिन 50 हजार से भी अधिक लोगों के लिए पेयजल की व्यवस्था की गई। क्लब ने दीनदयाल अस्पताल दिल्ली के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। दस दिन के दौरान करीब 200 लोगों ने रक्त दान किया। माहेश्वरी क्लब ने हार्ट केयर फाउंडेशन ऑफ इण्डिया के साथ मिलकर मेले में लगाए गए सभी स्टॉलों के सदस्यों के खाने-पीने की व्यवस्था की जिसमें करीब 1हजार सदस्यों को प्रतिदिन भोजन कराया गया। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में सभापति श्री राजकुमार डागा, समाज कल्याण मंत्री श्री गोविन्द मूंदड़ा, श्री नंदलाल चाण्डक का विशेष सहयोग रहा।

चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष

मंत्री

बिजयनगर। अजमेर जिला माहेश्वरी की साधारण सभा माहेश्वरी सेवा सदन बिजयनगर मे सम्पन्न हुई जिसमें हनुमत प्रकाश इनाणी को आगामी 3 वर्ष के हेतु अध्यक्ष चुना गया। मंत्री - ओमप्रकाश नवाल, उपाध्यक्ष-श्री हरीराम तोषनीवाल, सुनीलकुमार मून्दड़ा, संयुक्तमंत्री श्री शिवरतन पलोड, श्री नटवरलाल मालपाणी, कोषाध्यक्ष-श्री विजयकरण कांकाणी, संगठनमंत्री - श्रीसत्यनारायण न्याती को सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया।

रंगारंग गरबों ने समां बांधा

मनासा। माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी भवन द्वारिकापुरी में नवरात्रि महोत्सव पर गरबे का आयोजन मनमोहन विद्युत सज्जा एवं आर्केस्ट्रा के साथ किया गया। म.प्र.पश्चिमांचल माहेश्वरी सभा सदस्य एवं नीमच जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व उपाध्यक्ष रामगोपाल मंत्री ने मुख्य अतिथि पद से अपने विचार प्रकट किए। माँ जगदम्बे की प्रतिमा एवं घट स्थापना के कार्यक्रम में समाज बंधुओं ने बड़ी संख्या में उपस्थिति दर्ज कराई। समाज की युवतियों एवं महिलाओं ने हर रोज निश्चित किए गए रंगों के परिधान पहनकर तथा एक ताल में डांडिया खेलकर पूरे शहर को आश्चर्यचकित कर दिया। प्रत्येक दिन माहेश्वरी समाज के युवक एवं युवतियों ने कपल राउंड खेलकर सभी का मन मोह लिया। नवयुवक मंडल के अध्यक्ष सुनील झंवर, सचिव रामेश्वर पोरवाल, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला झंवर, उपाध्यक्ष श्रीमती गिरिजा मुंगड़, कोषाध्यक्ष श्रीमती कृष्णा मंत्री, उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता भजेजी ने संचालन किया।

श्री पलौड़ का सम्मान

उज्जैन। विक्रमादित्य क्लॉथ मार्केट एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष श्री महेश पलौड़ का दीपावली मिलन समारोह में सम्मान किया गया। इस अवसर पर वन एवं ऊर्जा राज्यमंत्री श्री पारस जैन, दूरसंचार के महाप्रबंधक श्री बालकिशन, विक्रमादित्य क्लॉथ मार्केट मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री पवन बोहरा, सचिव श्री विमल जैन, विक्रमादित्य नागरिक सहकारी बैंक के अध्यक्ष श्री शरद पसारी उपस्थित थे।

हड्डी रोग निदान एवं फिजियोथेरेपी शिविर सम्पन्न

मनासा। स्वर्गीय श्रीमती काशीबाई शिवकरण जी सारडा की स्मृति में मनासा के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं समाजेसवी श्री घनश्यामजी सारडा द्वारा हड्डी रोग एवं फिजियोथेरेपी शिविर का आठ दिवसीय निःशुल्क आयोजन नारायण सेवा संस्थान शाखा मनासा के माध्यम से किया गया। सचिव हरिशचंद्र दुरग एवं प्रकाश झंवर ने बताया कि यह संस्था द्वारा आयोजित चतुर्थ निःशुल्क शिविर है। शिविर में डॉ.नरेश परवाल द्वारा प्रथम दिन 200 मरीजों का परीक्षण कर योग्य परामर्श दिया गया।

आठ दिवसीय शिविर में प्रतिदिन करीब 125 मरीजों का इंदौर के फिजियो चिकित्सकों ने उपचार किया। संस्था के बृजमोहन समदानी एवं बालकृष्ण मूंदड़ा ने बताया कि शिविर समापन के इस अवसर पर सभी फिजियोथेरेपिस्ट चिकित्सकों डॉ. डेनियल, डॉ. तरुण, डॉ. हर्षमोहन, डॉ.रोहित मोहश्वरी का सम्मान किया गया एवं उन्हें प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। डॉ.महेश भजेजी एवं मनोज संघई जैसे प्रसिद्ध डॉक्टरों ने भी शिविर में उपस्थित होकर शिविर का लाभ लिया एवं अपनी सेवाएँ प्रदान की। अनिल सारडा, प्रमोद बसेर, रामनिवास दुरग एवं शाखा के अन्य सदस्यों ने सारडा परिवार, डॉ.नरेश परवाल एवं अन्य चिकित्सकों का आभार व्यक्त किया।

नेत्रदान महादान के नारे को सार्थक किया माहेश्वरी कपल क्लब ने

रतलाम। नेत्रदान-महादान के नारे को विगत वर्ष में श्री माहेश्वरी कपल क्लब ने सार्थक कर दिखाया है। क्लब के सदस्यों की पहल पर सर्वश्री रामनिवास धूत, श्रीमती अयोध्या देवी प्रह्लाद बाहेती, श्रीमती कुसुम देवी धर्मपत्नी श्री बद्रीनारायण राठी, श्री नारायण भंसाली, श्रीमती मेहता (जैन परिवार) के मरणोपरांत नेत्रों को उत्सर्जित कर उन लोगों के जीवन में रोशनी कर दी जिनके जीवन में अंधेरा था। उक्त कार्य में रोटरी क्लब रतलाम एवं डॉ. हर्ष दुबे (नेत्र रोग विशेषज्ञ) का सहयोग भी सराहनीय है।

विदर्भ माहेश्वरी महिला संगठन के चुनाव

अध्यक्ष

सचिव

विदर्भ। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के चुनाव श्रीमती ताराजी माहेश्वरी की अध्यक्षता में तथा चुनाव अधिकारी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन दक्षिणांचल संयुक्त मंत्री श्रीमती सरला लोहिया व पर्यवेक्षक परिवार परामर्श समिति संयोजिका राजकुमारी कोठारी की उपस्थित में सम्पन्न हुए। जिसमें अध्यक्ष श्रीमती आशा लड्ढा अमरावती, उपाध्यक्ष श्रीमती मीना साँवल नागपुर व श्रीमती सरोज पनपालिया खामगांव, सचिव श्रीमती ज्योति बाहेती अकोला, सह-सचिव श्रीमती सुनीता सोमानी चंद्रपुर व श्रीमती उषा करवा अमरावती, कोषाध्यक्षा श्रीमती गोपी डागा आर्वी, प्रचार-मंत्री श्रीमती शोभा गट्टानी यवतमाल, संगठन मंत्री श्रीमती सुनंदा सोनी मालेगांव, कार्यसमिति सदस्य श्रीमती डॉ.तारा माहेश्वरी चुनी गई।

तपोधन श्रीकृष्णदास जाजू की 50वीं पुण्यतिथि मनाई

अमरावती। माहेश्वरी समाज की परम वन्दनीय विभूति स्व. श्री श्रीकृष्णदास जाजू जिनकी तपोधन उपाधि स्वयं ही उनके विषय में बहुत कुछ कह देती है, ने सफल वकालत का पेशा ठुकराकर महात्मा गांधी के जीवन दर्शन को अपनाकर अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता के बाद संत विनोबा भावे के भूदान आंदोलन को सफलता की ओर अग्रसर करते हुए यात्रा में ही अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के जनक सतत् 50 वर्षों तक माहेश्वरी महासभा के सूत्रधार शिल्पकार बने रहे।

तत्कालीन मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री पद तथा देश के वित्तमंत्री का पद आपके द्वार पर बार-बार आया किन्तु आपने सता सुख को बड़ी विनम्रता से नकार दिया था। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत आपने ही महात्मा गांधी को दिया था। श्री जाजू की 50 वीं पुण्यतिथि पर जिला माहेश्वरी सभा की श्री क्षेत्र जहांगीरपुर की विशेष सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष डॉ. मधुसुदनजी मारू ने उनकी विशाल प्रतिमा को पुष्पमाला पहनाई। श्यामसुन्दर टावरी ने उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता श्री नवलकिशोर राठी ने की।

धूमधाम से मनाया गया दीपावली मिलन समारोह

लखनऊ। ट्रांस गोमती माहेश्वरी समाज एवं ट्रांस गोमती माहेश्वरी संगठन द्वारा माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के नवनिर्मित माहेश्वरी सत्संग भवन के स्व. सीतादेवी राठी सभागार में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर महिला संगठन द्वारा देवी माता की चौकी (जागरण) का आयोजन किया गया। माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के उपस्थित आजीवन ट्रस्टियों द्वारा माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना एवं ज्योत प्रज्ज्वलन के उपरांत माता की भेटों का आनंद लिया जो कि रात्रि 12 बजे समाप्त हुआ। समाज के लगभग 100 परिवारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई । कार्यक्रम के उपरांत माता का प्रसाद सबको भेंट किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्रीमती ऊषा झंवर, स्वाती सोमानी, ममता राठी, राधा राठी, शशि काबरा, बबीता सोमानी, श्रीमती राजश्री सोनी एवं श्री हरिकृष्ण राठी, प्रदीप झंवर, डी.पी.माहेश्वरी, बनवारीलाल सोमानी, गिरधारी सोमानी, महेंद्र सोनी, कमल काबरा, नंदकिशोर पेड़ीवाल, देवप्रसाद माहेश्वरी, महेंद्र राठी, परमानंद लोया, अजय पेड़ीवाल, चंद्रप्रकाश माहेश्वरी, राजेश माहेश्वरी एवं श्रीसत्यनारायण लड्ढा का विशेष सहयोग रहा तथा समाज के सभी सदस्यों ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

चुनाव सम्पन्न

पुरी। विगत 13 नवम्बर 2005 को महाप्रभु श्री जगन्नाथ धाम पुरी में उत्कल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के नव निर्वाचित प्रादेशिक कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक श्री भागीरथ जी चांडक की अध्यक्षता में तथा पर्यवेक्षक श्री मोहनलालजी राठी, भिलाई की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन श्री रामगोपाल जी पचीसिया ने किया। चुनाव अधिकारी श्री जेठमलजी भट्टड, राउरकेला ने चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराई।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा में कार्यसमिति सदस्य का चयन पुनः श्री श्यामसुन्दर झंवर का किया गया। आगामी सत्र के लिये प्रांतीय पदाधिकारियों में सर्वसम्मति से श्री मदनमोहन जी राठी, कटक का अध्यक्ष तथा मंत्री पद के लिये श्री विजयकुमार लोहिया राउरकेला का चयन हुआ। यह जानकारी श्री भागीरथ चांडक ने दी।

दीपावली मिलन समारोह सम्पन्न

गुड़गांव। गुड़गांव के लगभग 150 माहेश्वरी परिवारों के संगठन ''माहेश्वरी समाज जिला गुड़गांव'' तथा ''माहेश्वरी महिला मंडल गुड़गांव'' ने संयुक्त रूप से समाज के अध्यक्ष श्री राजेंद्र कलंत्री की अध्यक्षता में दीपावली के उपलक्ष्य में ''दीपावली मिलन'' का आयोजन किया। समाज के संरक्षकगण सर्वश्री विष्णुगोपाल माहेश्वरी एवं एस.सी.माहेश्वरी तथा माहेश्वरी महिला मंडल की संरक्षिका श्रीमती अनामिका कलंत्री द्वारा भगवान महेश की प्रतिमा का पूजन किया गया। श्री राजेंद्र कलंत्री व श्रीमती दया माहेश्वरी (अध्यक्ष, माहेश्वरी महिला मंडल) ने दीप प्रज्ज्वलित कर उत्सव का विधिवत उद्घाटन किया। उसके उपरांत कुमारी पूनम कलंत्री, कुमारी सुरभि काबरा तथा कुमारी अदिति ने बड़े ही सुरीले स्वर में महेश वंदना प्रस्तुत की। उपाध्यक्ष श्री अरुण माहेश्वरी ने समाज की मुख्य गतिविधियों का ब्यौरा दिया। मनोरंजक कार्यक्रमों के बाद स्वादिष्ट व्यंजनों से परिपूर्ण सहभोज का आनंद लिया। धन्यवाद प्रस्ताव श्री राजकुमार सह-सचिव द्वारा किया गया। मंच संचालन सचिव श्री चंद्रप्रकाश काबरा द्वारा किया गया।

दीपावली मिलन समारोह सम्पन्न

जमशेदपुर। माहेश्वरी मंडल जमशेदरपुर द्वारा दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। मंडल अध्यक्ष श्री महावीरप्रसाद आगीवाल द्वारा भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत श्रीगणेश किया गया। श्रीमती प्रभा बियाणी ने गणेश वंदना प्रस्तुत की व सुधा सारड़ा ने भगवान आशुतोष की वंदना की। सचिव श्री जुगलकिशोर माहेश्वरी ने दीपावली की शुभकामना देते हुए मंडल की वर्तमान गतिविधियों व भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। आगामी जनवरी माह में मंडल के प्रांगण में श्री सुरेश कृष्णानुरागी मथुरा के द्वारा रामकथा के आयोजन की भी जानकारी दी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत नृत्य प्रतियोगिता के साथ हुई जिसमें मोहित, प्रतीक, रागिनी व सुकृति धूत, मास्टर हर्ष सारड़ा, प्रियंशा व सुरभि ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किये। श्रीरामकुमारजी कांकाणी को उनकी विभिन्न उपलब्धियों व सेवाओं के लिए शाल, श्रीफल व सम्मान पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। महिला मंच की अध्यक्षा ने अपनी 4 सदस्यों को उनकी नियमित उपस्थिति के लिए सम्मानित किया। मंच व कार्यक्रम का संचालन पवन काबरा, ऊषा माहेश्वरी व जगदीश धूत ने किया। इस अवसर पर समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान भी किया गया । दीपावली उपहार-पत्र का ड्रा भी संपन्न हुआ। जिसमें प्रथम पुरस्कार सहित कुल 38 पुरस्कार प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन श्री छीतरमल धूत ने दिया। कार्यक्रम के अन्त में सहभोज का आयोजन किया गया।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह में मेधावी छात्र-छात्राओं तथा बुजुर्गों का सम्मान

बहादुरगढ़। माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में दीपावली स्नेह मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री रामबाबू काबरा, अध्यक्ष हिन्दुस्तान सेनेट्रीवेयर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के आगमन पर सभा अध्यक्ष श्री रामानंदजी माहेश्वरी, श्री दामोदरप्रसाद कोठारी (उपाध्यक्ष), श्री लक्ष्मीनारायण धूत (सचिव), श्री सुनील मालू (सह सचिव), श्री रतनलाल माहेश्वरी, श्री कैलाशचंद्र जाखेटिया, श्री सीताराम परवाल एवं भवन आवंटन समिति चेयरमेन श्री राधेश्याम काबरा आदि ने अभिनंदन किया।

मुख्य अतिथि ने भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । महिला संगठन अध्यक्षा श्रीमती अंजना राठी, सचिव श्रीमती सरिता काबरा व अन्य महिला सदस्यों ने महेश वंदना की। अध्यक्ष श्री रामानंद माहेश्वरी ने दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए सभा की गतिविधियों, उपलब्धियों व अन्य कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस मौके पर सर्वश्री राधेश्याम काबरा, कैलाश जाखोटिया, राजेंश परवाल, रामबाबू काबरा, दामोदरप्रसाद कोठारी, रतनलाल माहेश्वरी, सतीश माहेश्वरी, प्रहलादराय सारडा, श्रीमती अंजना राठी, लक्ष्मीनारायण धूत ने भी विचार रखे। मुख्य अतिथि श्री रामबाबू काबरा के सौजन्य से इस वर्ष 65 वर्ष की आयु होने पर श्री के.एल.माहेश्वरी, श्री नाथूराम राठी, श्रीमती शोभा भुराड़िया और श्री लक्ष्मीनारायण धूत को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि श्री काबरा ने 60 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया तथा श्री आर.डी.परवाल एवं श्री कैलाशचंद्र जाखोटिया के सौजन्य से मैरिट में आने वाले सात छात्र-छात्राओं को विशेष पुरस्कार व प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया। इसके पश्चात नृत्य, फैंसी ड्रेस, नाटक, राजस्थानी गीत, रंगोली, लेमन रेस, मेहंदी प्रतियोगिता, युगल जोड़ी गीत प्रतियोगिता, हरियाणी नृत्य आदि में प्रथम व द्वितीय आने वाले 43 प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया। मुख्य अतिथि श्री काबरा ने बहादुरगढ़ माहेश्वरी सभा द्वारा कराए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। सचिव श्री धूत ने मुख्य अतिथि व उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया। श्री सतीश माहेश्वरी, सुनील काबरा, अरविंद माहेश्वरी द्वारा तंबोला गेम करवाए गए तथा सामूहिक भोज व लक्की ड्रा के साथ समारोह समाप्त हुआ।

श्री मूंदड़ा अध्यक्ष चुने गये

देवास। माहेश्वरी समाज देवास का अन्नकूट महोत्सव समाज के श्रीराम मंदिर में मनाया गया। उक्त मौके पर समाज के अध्यक्ष व कार्यकारिणी के चुनाव निर्वाचन मंडल के सदस्य श्री मुरलीधर डागा, इंजीनियर एम.एल.गगरानी व श्री मुरलीधर मूंदड़ा द्वारा कराए गए जिसमें अध्यक्ष श्री नारायणदास मूंदड़ा तथा कार्यकारिणी के 10 सदस्य चुने गए। कार्यक्रम में पश्चिम क्षेत्र माहेश्वरी महिला की अध्यक्षा डॉ.श्रीमती वैजयंती माहेश्वरी का स्वागत व अभिनंदन किया गया।

अन्नकूट सम्पन्न

पुरदिलनगर। ठाकुर मुरली मनोहर जी मंदिर में अन्नकूट महोत्सव में मनोहारी झाँकी के मध्य गोवर्धननाथ का शृंगार किया गया। हजारों दर्शनार्थी पधारे एवं भोग प्रसाद वितरित किया गया। सर्वश्री आशुतोष, सचिन, गोपाल, हिमांशु जाखेटिया के अतिरिक्त राधेश्याम चैचाणी, विष्णु राठी आदि माहेश्वरी बंधुओं का प्रसाद वितरण में सहयोग रहा।

लामांजन बांध का लोकार्पण

जलगांव। गिरणा नदी पर जलगांव मर्चेन्ट सहकारी बैंक व हरनारायण राठी द्वारा स्वखर्च से निर्मित लामांजन बांध का लोकार्पण श्री भाऊ साहेब हरनारायण राठी जलाशय (लामांजन) नामकरण पाट बंधारे मंत्री अजित पंवार द्वारा किया गया। सुरेश दादा जैन, राष्ट्रवादी प्रदेशाध्यक्ष अरूण भाई गुजराथी जिलाधिकारी विजय सिंहल, पुलिस अधीक्षक वसंतराव कोरेगांवकर, मर्चेन्ट बैंक के संस्थापक अध्यक्ष हरनारायाण राठी, उपाध्यक्ष शरद लाठी आदि अनेक मान्यवर उपस्थित थे।

अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

गजंबासौदा। स्थानीय हितकारणी धर्मशाला में गोवर्धन पूजा संपन्न हुई। पाँच विद्वान पंडितों द्वारा भगवान गोवर्धनजी की आकर्षक प्रतिमा बनाकर शृंगार किया गया। आरती के पश्चात प्रसादी वितरण हुई। कार्यक्रम में समाज के सर्वश्री रामस्वरूप सर्राफ, शिक्षाविद् बाबूलाल माहेश्वरी, श्री कैलाशनारायण परवाल, श्री कैलाश सर्राफ, श्री नवकिशोर गोयदानी, श्री रामनारायण पलौड़, श्री राजीव पलौड़, श्री देवकिशन बियाणी, श्री हरिबाबू साबू, श्री मनोज डागा, श्री रामविलास पंसारी सहित भारी संख्या में महिलाओं एवं बच्चों की उपस्थिति ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

चुनाव सम्पन्न

गजंबासौदा। समाज की नई कार्यकारिणी के सर्वसम्मति से हुए गठन में कार्यवाहक अध्यक्ष श्री कैलाश नारायण परवाल, अध्यक्ष श्री रामस्वरूप सर्राफ, उपाध्यक्ष श्री नवलकिशोर गोयदानी, सचिव श्री रामनिवास मूंदड़ा, सह सचिव श्री योगेश बांगड़, कोषाध्यक्ष श्री देवकिशन बिन्नानी एवं कार्यकारिणी सदस्य श्री रामनारायण पलौड़, श्री जोगीलाल सोनी, श्री राजेंद्र मल्ल, श्री गोकुलदास पंसारी, श्री प्रमोद सर्राफ, श्री पुरुषोत्तम होलानी, श्री हरिकृष्ण साबू, श्री प्रदीप माहेश्वरी, श्री मनोज डागा चुने गए जबकि जिला प्रतिनिधि हेतु श्री बाबूलाल माहेश्वरी एवं श्री सतोष मूंदड़ा एवं प्रदेश प्रतिनिधि हेतु श्री राजीव पलौड़ चुने गये।

बच्चों को संस्कारित करने हेतु श्रीराम कथा महोत्सव

जलगांव। जलगांव जिला माहेश्वरी संगठन का उपक्रम जलगांव जिला माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से दिनांक 12, 13 व 14 नवम्बर को श्रीराम कथा महोत्सव का विशेष रूप से बच्चों के लिये आयोजन किया गया। आचार्य श्री किशोर के शिष्य कमलेश महाराज की मधुर वाणी से बच्चों व बड़ों का भी मनमोह लिया, प्रभु रामचंद्र का बचपन, शिक्षा शूरवीरता, अनेक प्रसंगों द्वारा बच्चों को समझा गया। महाराजश्री कमलेश जी का सत्कार संगठन प्रदेश सचिव सुमन चांडक, कार्यक्रम चेयरमेन ज्योत्सना लाहोटी, कमला जाखेटे, अध्यक्षा उर्मिला झंवर, सौ. सरोजनी कासट आदि ने महेश पूजन किया, महेश वंदना के बाद श्री कमलेश महाराज द्वारा कथा प्रारंभ हुई। तीन दिन तक सभी ने बाल गोपाल सहित कथा आनंद लिया। श्री रमेश लाहोटी, केदारनाथ मूंदड़ा, सुमती नवाल, इंद्रायणी पलौड़, राहुल झंवर, सोनाली झंवर, अनिल जाखेटे, सुनील जाखेटे, मोनी दहाड, राम नवाल, शाम झंवर सभी महिला मंडल झोन के पदाधिकारी, अशोक धूत, दीपक लढ्ढा, अशोक राठी, अशोक जाजू, जगदीश जाखेटे, गौरव धुप्पड़, शिल्पा लोढा आदि अनेक बन्धु उपस्थित थे।

दीपावली मिलन समारोह एवं अन्नकूट महोत्सव

रतनगढ़। श्री माहेश्वरी समाज का दीपावली मिलन समारोह एवं अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न हुआ। सभी बन्धुओं ने एक दूसरे को बधाई दी एवं नव वर्ष की मंगल कामना की। श्री गोर्वधन नाथ मन्दिर पर अन्नकूट किया गया। भगवान की अभिषेक पूजा अर्चना की एवं प्रसाद वितरित किया गया। पूर्व मे रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

माहेश्वरी प्रगति मण्डल के चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष

हुबली। माहेश्वरी प्रगति मंडल की बैठक में श्री ब्रज भूतड़ा को अध्यक्ष तथा श्री विनोद लड्ढा को सचिव वर्ष 2005-2006 के लिये निर्विरोध चुना गया। श्री ब्रज भूतड़ा रोटरी क्लब हुबली के भूतपूर्व अध्यक्ष भी हैं।

दीपावली मिलन समारोह एवं अन्नकूट महोत्सव

डिकेन। श्री माहेश्वरी समाज द्वारा वर्तमान नवयुवक मण्डल अध्यक्ष मनोज सोडानी के निवास पर दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सभी माहेश्वरी बंधुओं द्वारा एक दूसरे को दीपावली की हार्दिक बधाई एवं नव वर्ष की शुभ कामना दी। इसके साथ ही श्री चारभुजा मन्दिर पर अन्नकूट का आयोजन किया गया। श्री चारभुजा नाथ का अभिषेक कर पूजा-अर्चना की गई, फिर प्रसाद वितरित किया गया एवं सहभोज का आयोजन किया गया। सभी माहेश्वरी बन्धुओं द्वारा अन्नकूट महोत्सव हर्ष से मनाया गया।

श्री रामदयालजी महाराज के प्रवचन हुए

मनासा। श्री रामनिवास धाम शाहपुरा पीठेश्वर श्री जगद्गुरु श्री रामदयालजी महाराज ने स्थानीय रामस्नेही संप्रदाय रामद्वारा पर प्रवचन देते हुए नववर्ष मंगलमय का आशीष देकर आनंद विभोर कर दिया। कार्यक्रम में मुरलीधर समदानी, हरीश दरग, गोपाल मूंदड़ा, धनश्याम कासट, बंसी समदानी, रमेश समदानी, श्यामसुंदर समदानी (मुंबई) एवं अन्य समाज बंधुओं ने महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

सिद्धामृत सूर्यक्रिया योग साधना शिविर का निःशुल्क आयोजन

इन्दौर। महायोगी स्वामी बुद्धपुरीजी के 30 वर्षों तक हिमालय की गुफाओं के एकांत में कठिन तप कर विकसित साधना सिद्धामृत सूर्य क्रिया योग को उनके परमशिष्य ब्रह्मचारी श्री सूर्यचैतन्यजी ने दस्तूर गार्डन, गुमाश्ता नगर में जनसाधारण से परिचित कराया। पूर्ण रूप से भरे दस्तूर गार्डन में अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए ब्रह्मचारी श्री सूर्यचैतन्यजी ने कहा जिस तरह हम मुख द्वारा जल ग्रहण करते हैं, नासिका द्वारा वायु उसी प्रकार सिद्धामृत क्रिया योग में विशेष विधियों द्वारा नेत्रों को प्रकाश ग्रहण योग्य बनाया जाता है। विशेष साधना अभ्यास के द्वारा यह प्रकाश रेटिना से होकर पीछे मस्तिष्क में पहुँचता है और

मस्तिष्क के प्रकाश संवेदी अंगों, पिय्युटरी तथा पीनियल ग्रंथियों को प्रभावित करता है। यह ग्रंथियां शरीर की अन्य समस्त ग्रंथियों तथा उनके कार्यों को नियंत्रित करती है। सूर्य की शुद्ध ऊर्जा शरीर के पोषक रसों के निर्माण में वृद्धि करती है तथा नाड़ियों के मल को दूर करती है। यह एक तरह से शरीर के रूपान्तरण की प्रक्रिया है। इसके सात चरण हैं। प्रथम तीन चरण सामान्य लोगों के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास में सहायक हैं। अगले चार चरण गंभीर साधकों के लिये हैं।

यह निःशुल्क शिविर दो सत्रों में सम्पन्न हुआ। यह जानकारी आयोजक श्री महेश होलानी ने दी।

माहेश्वरी संघ मन्दसौर के चुनाव सम्पन्न

मन्दसौर। माहेश्वरी संघ मन्दसौर के निर्वाचन लगभग 16 वर्षो के पश्चात दि. 20/10/05 को माहेश्वरी माध्यमिक विद्यालय मन्दसौर में निर्वाचन अधिकारी श्री रमेशचन्द जी परवाल एवं उप निर्वाचन अधिकारी श्री किशोर कुमार सोनी द्वारा सम्पन्न करवाये गये जिसमें संघ के लगभग 102 सदस्यों ने पहली बार अपने मताधिकार का उपयोग किया। संघ के निर्वाचन में निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखरजी सोमानी, उपाध्यक्ष - श्री राजेन्द्र जी काबरा, श्री यशवन्त जी भदादा, सचिव - श्री रामगोपाल भदादा, सहसचिव-श्री कृष्णकुमार जी भदादा, कोषाध्यक्ष-श्री घनश्याम जी झंवर एवं कार्यकारीणी सदस्यो में श्री बाबूलाल जी डागा, श्री महेश जी चिचानी, श्री बंशीलाल जी काबरा, श्री ओमप्रकाशजी चाण्डक, श्री हरिवल्लभ जी मालू एवं श्री द्वारकादास जी सोमानी निर्वाचित हुए चुने हुए पदाधिकारियो ने श्री मोहनलाल जी मण्डोवरा, श्री बंशीलाल जी काबरा एवं श्री श्याम जी जाखेटिया को संघ का संरक्षक नियुक्त किया गया। समाज के सभी वरिष्ठ, युवा मंडल, महिला मण्डल ने निर्वाचित सदस्यो की बधाई दी है।

अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

रतलाम। श्री माहेश्वरी समाज के श्री रामोला मंदिर पर मिलन समारोह एवं अन्नकूट महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। दोपहर में भजन कीर्तन हुए। सायं भोग एवं 108 दीपों से महाआरती हुई। मंदिर परिसर में आकर्षक रंगोलियों का निर्माण किया गया। सायं 5 बजे सामूहिक प्रसादी श्री माहेश्वरी भवन पर हुई जिसमें बड़ी संख्या में समाज बंधुओं ने भाग लेकर प्रसादी के साथ दीप पर्व की शुभकामनाएँ एक-दूसरे को दीं। समाज के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण मालपानी ने सभी समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया।

रामदयालजी महाराज की भागवत कथा 2 दिसंबर से

परभणी। रामस्नेह संप्रदाय के पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री रामदयालजी महाराज की श्रीमद भागवत का आयोजन परभणी जिले के मानवत तालुका के भागवत सत्संग सेवा समिति रामबाड़ा के तत्वावधान में स्व. झुमकाबाई मंत्री सभागृह में 2 से 8 दिसम्बर 2005 तक किया गया है। सुबह 8.30 से 11.30 बजे तथा सायं 7 से 9.30 बजे तक परम पूज्य रामदयालजी महाराज के मुखारबिंद से कथा होगी। इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में भक्तगण कथा का श्रवण करने का आह्वान आयोजक तुलसीराम रामनिवास मंत्री ने किया।

दीपावली के शुभअवसर पर उद्योगपति श्री विजय कलंत्री, विकास कलंत्री एवं विशाल कलंत्री ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुख के निवास पर जाकर उनसे मुलाकात कर दीपावली की शुभकामनाएं दी।

चार्तुमास का समापन

मनासा। स्थानीय रामस्नेही समुदाय द्वारा श्री रामद्वारा परिसर में चातुर्मास समापन समारोह सम्पन्न हुआ। चातुर्मास हेतु विराजित संत श्री भजनारामजी महाराज को परंपरागत रूप से चढ़ावा समर्पण किया गया। इस अवसर पर रामस्नेही संप्रदाय के श्री हनुमान दरक, सत्यनारायण तोषनीवाल, रामगोपाल मंत्री, रामस्वरूप काबरा, हरीश दरक और रामेश्वर मारू उपस्थित थे।

बियाणी मिलिट्री स्कूल का वर्चस्व

जलगांव। जिला स्तर पर रोलर स्केटिंग स्पर्धा में भुसावल के सुप्रसिद्ध बियाणी स्कूल का शानदार प्रदर्शन रहा। जलगांव जिला रोलर स्केटिंग एसोसिएशन जिला क्रीड़ा अधिकारी कार्यालय द्वारा आयोजित स्पर्धा में 11 साल के ग्रुप में रौनक मनोज बियाणी प्रथम रहे। (बियाणी स्कूल) लड़कियों में मुस्कान मनोज बियाणी तृतीय तथा 14 साल में विवेक लक्ष्मण बियाणी स्कूल का प्रदर्शन शानदार रहा।

श्री प्रदीप भुराड़िया का सत्कार

भुसावल। भुसावल निवासी श्री प्रदीप भुराड़िया का अखिल भारतीय मानवाधिकारी नागरिक विकल्प समिति के जिला अध्यक्ष पद पर नियुक्त किये जाने पर अनेक संस्थाओं द्वारा सत्कार किया गया तथा नगर सेवक श्री मनोज बियाणी रामस्वरूप दरगड तथा राजस्थानी विप्र समाज द्वारा भी सत्कार किया गया।

शून्य से शिखर

श्री रामपाल सोनी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के कई रुप-रंग है। माहेश्वरी होने से उद्यमशीलता उन्हें विरासत में मिली है तो आसपास के माहौल ने उनमें समाज के प्रति संवेदना पैदा की है। फलतः जहां उन्होने सरकारी नौकरी से कैरियर शुरु किया वहीं टेक्सटाइल इकाई राजस्थान सिंथेटिक्स की स्थापना की। शिक्षा अनुरागी श्री सोनी ने कई शिक्षा संस्थानों को संरक्षण दिया तो माहेश्वरी समाज को नेतृत्व भी प्रदान किया। श्री माहेश्वरी टाईम्स का यह कॉलम 'शून्य से शिखर' ऐसे शख्स पर फोकस करता है जो 'जीओ और जीने दो' के मानवधर्म की अगली कड़ी 'सबके लिए जीने का माहौल बनाओं' में जुटे हुए है। श्री रामपाल सोनी ऐसे ही व्यक्ति हैं जो कई अवार्ड्स से नवाजे गए है और माहेश्वरी समाज के गौरव है।

परिश्रम के पारस

रामपाल सोनी

■ प्रकाश बियाणी, इन्दौर

वस्त्रोद्योग जगत में आज भीलवाड़ा का नाम देश ही नहीं विश्व मानचित्र पर भी अग्रणी है और जब कहीं भीलवाड़ा की बात होती है तो संगम उद्योग समूह (संगम ग्रुप आफ इंडस्ट्रीज) का नाम सबसे पहले आता है। अल्प समय में ही संगम ब्रांड को विश्व क्षितिज पर पहुंचाने का श्रेय जाता है समूह के ऊर्जावान अध्यक्ष श्री रामपाल सोनी को। श्री सोनी वस्त्र उद्योग जगत के ऐसे चमकते सितारे हैं जिनकी साहसिक उद्यमिता का आज हर कोई कायल है। अपनी प्रतिभा और लगन से सफलता के शिखर छूने वाले श्री सोनी के बारे में यह जनश्रुति हो गई है कि वे परिश्रम के पारस हैं। उनके संपर्क में आते ही लोहा भी सोना हो जाता है। वे जिस-जिस क्षेत्र में हाथ डालते हैं उसमें सफलता सुनिश्चित हो जाती है। अथक परिश्रम और ईमानदारी के बल पर उन्होंने अपना यह साम्राज्य स्थापित किया है। श्री सोनी एक सफल उद्यमी ही नहीं अपितु आदर्श समाजसेवी भी हैं। समाज के कमजोर वर्ग के प्रति सहानुभूति से भरे और जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तैयार रहने

भीलवाड़ा वस्त्रोद्योग जगत के दमकते सितारे की शून्य से शिखर की यात्रा

वाले श्री सोनी ने समाज को शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में ऐसी सौगातें दी हैं, जिनका लाभ आज सभी वर्गों को मिल रहा है। वे ऐसे विकास पुरुष हैं जो पूरे समाज को अपने साथ आगे ले जाने के लिए तत्पर हैं। श्री सोनी की सहृदयता और सदाशयता को मानवता भी प्रणाम करती है। वर्ष 1982 में मात्र आठ लूम से कारोबार शुरू कर पांच सौ करोड़ के टर्न ओवर तक पहुंच चुके श्री सोनी की यह शून्य से शिखर की यात्रा निश्चित ही युवाओं के लिए प्रेरणापुंज है।

श्री सोनी ने समाज के हर तबके के लोगों से मिलकर उनकी आवश्यकताओं को बहुत नजदीक से देखा, समझा तथा निराकरण का हर सम्भव प्रयास किया। प्रेरणा दे सकने वाला व्यक्तित्व वहीं होता है जो सर्वप्रथम स्वयं समय, तन, मन एवं धन समाज को प्रदान करे, यह सब बातें श्री सोनी में देखने को मिलती है। अपने मृदुभाषी व्यवहार एवं एक-दूसरे के सुख-दु:ख में शामिल होने की प्रवृति के बल पर आज वे समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है।

श्री रामपाल सोनी ने वर्ष 1982 में मात्र आठ लूम लगाकर उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रखा था। अपनी लगन और मेहनत से निरन्तर प्रगति करते हुए आज वे इस मुकाम पर पहुंचे हैं। आई.एस.ओ. 9002 से विभूषित संगम स्पिनर्स में करीब 64000 स्पिंडल के द्वारा बना डाइड स्पन यार्न देश के टेक्सटाइल जगत में विशिष्ट पहचान बनाये हुए है जिसने विदेशों में भी अपनी अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई है। पोलिस्टर विस्कोस सूटिंग निर्माण में आधुनिक आयातित एयर जेट, सल्जर एवं इलेक्ट्रॉनिक जेकार्ड युक्त वीविंग मशीनो का उपयोग कर संगम, अनमोल एवं अनुपम ब्राण्ड के कपड़ों ने न केवल भारत में वरन विदेशों में भी अपनी पहचान स्थापित की है। बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए संगम की विस्तार परियोजना आकार ले रही है। वर्षान्त तक एक लाख स्पिंडल धागा बनाने की क्षमता पूर्ण कर ली जाएगी। वहीं नया प्रोसेस हाउस, डेनियम कपड़ा उत्पादन के अलावा डेढ़ सौ एयरजेट लूम और लगाये जाने के साथ ही पच्चीस लाख ..... प्रतिमाह उत्पादन कार्य प्रारम्भ होने वाला है। संगम के स्पिनिंग प्लान्ट में 10 मेगावाट बिजली उत्पादन थर्मल प्लान्ट से स्वयं किया जा रहा है। इसके अलावा 21 मेगावाट का थर्मल पावर प्लान्ट और लगाया जा रहा है। ड्रेस मटेरियल व फर्निशिंग फैब्रिक्स के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट शैली, रंगों, डिजाइनों के बलबूत पर संगम टेक्सफेब ने सम्पूर्ण भारत वर्ष में अपनी विशेष पहचान बनाई औरे फैशन जगत में अग्रणी संस्था बन चुकी है। इस प्रकार छोटे से स्तर पर आरम्भ हुए इस कारोबार का वार्षिक टर्न ओवर 500 करोड़ पार कर गया है, जो आगामी वर्ष में एक हजार करोड़ हो जायेगा। ''**यदि व्यक्ति में कुछ करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो मेहनत व लगन से बहुत कुछ किया जा सकता है।**'' यहीं मूल मंत्र है श्री सोनीजी के व्यक्तित्व में समाये एक सफल उद्यमी का।

सफल व्यक्तित्व

भीलवाड़ा जिले के रूपाहेली ग्राम के स्व. श्री बद्रीलाल जी सोनी के साधारण परिवार में 26 जनवरी 1946 को श्री रामपाल सोनी का जन्म हुआ। अल्पायु में पिताश्री का स्वर्गवास हो जाने से श्री सोनी को उनकी माता श्रीमती केसरबाई ने विषम परिस्थितियों के बावजूद शिक्षित किया। श्री सोनी ने 1964 में जूनियर इंजीनियर के पद पर शासकीय सेवा से आजीविका शुरु की किन्तु नौकरी में उन्हें अपना और परिवार का भविष्य दिखाई नहीं दे रहा था। जल्दी ही अपनी बुद्धिमता व उद्यमिता का परिचय देते हुए सरकारी नौकरी से त्याग

श्री सोनी द्वारा स्थापित ''संगम स्कूल ऑफ एक्सीलेन्स'' नामक डे बोर्डिंग स्कूल को वर्ल्ड वाइज सुविधायुक्त स्कूल का दर्जा हासिल है, जहां छात्रों को अच्छी शिक्षा, पर्सनलिटी डेवलेपमेन्ट सहित विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं के जरिये शारीरिक विकास के साथ-साथ टेली कान्फ्रेसिंग के माध्यम से विदेशी स्कूलों का लाभ भी उपलब्ध कराया जाता है। श्री सोनी ने जो भी कार्य हाथ में लिया उससे उस संस्था तथा उसके पद की गरिमा बढ़ी है। ऐसे व्यक्तित्व के धनी श्री सोनी द्वारा जनहितार्थ चलाई जा रही योजनाएं उनकी कुशल कार्यप्रणाली को उजागर करती हैं।

पत्र देकर निजी व्यवसाय शुरु किया तथा लगन और मेहनत से निरन्तर प्रगति करते हुए शिखर पर पहुंच गये। औद्योगिक जगत में अपना परचम फहराने के साथ ही आपने सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक जगत में भी समाजसेवा के नए आयाम स्थापित किये।

श्री सोनी ने समाज के हर तबके के लोगों से मिलकर उनकी आवश्यकताओं को बहुत नजदीक से देखा, समझा तथा निराकरण का हर सम्भव प्रयास किया। प्रेरणा दे सकने वाला व्यक्तित्व वही होता है जो सर्वप्रथम स्वयं समय, तन, मन एवं धन समाज को प्रदान करे, यह सब बातें श्री सोनी में देखने को मिलती है। अपने मृदुभाषी व्यवहार एवं एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होने की प्रवृत्ति के बल पर आज वे समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए हैं।

इन्हीं विशेषताओं के कारण सर्वप्रथम समाज बन्धुओं ने श्री सोनी को भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष पद पर कार्य करने का अवसर प्रदान किया। तदुपरान्त वे राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष बने तथा वर्ष 1993 में इसके अध्यक्ष चुने गये। प्रान्तीय माहेश्वरी समाज की यह शीर्षतम कार्यरत संस्था है। अध्यक्षीय कार्यकाल में श्री सोनी की सोच व कार्यशैली से

माहेश्वरी समाज के गौरव

श्री सोनी ने जिस तेजी के साथ अपने औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार किया वह चमत्कार जैसा लगता है। तस्वीर का दूसरा पहलू उनके द्वारा की जा रही निरंतर समाज सेवा तथा समाज के पिछड़े एवं दबे कुचले घटकों के लिए उनकी सकारात्मक सोच है जो निश्चय ही प्रेरणादायक है। राजस्थान पिछड़ा प्रदेश है इसी कारण यहाँ का माहेश्वरी समाज भी ज्यादा अच्छी स्थिति में नहीं था। श्री सोनी ने अपने संपत्ति बढ़ाने के साथ-साथ समाज की खुशहाली को भी सदैव ध्यान में रखा। इसी का परिणाम है कि आज भीलवाड़ा और राजस्थान का माहेश्वरी समाज निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। श्री सोनी के अथक परिश्रम से समाज में जागृति आई है और उन्नति का नया रास्ता मिला है।

धन तो कई लोगों ने कमाया होगा पर शिखर पर पहुँचने के बाद सहज स्वभाव होना असंभव नहीं, तो भी कठिन अवश्य है परन्तु श्री सोनी ने अपने मधुर व्यवहार से इस मान्यता को ठुकरा दिया। उनकी छबि उन लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है जो थोड़ा कुछ मिलते ही अपने को शिखर पुरुष समझने लगते हैं। भीलवाड़ा के माहेश्वरी समाज में सभी दृष्टि में प्रथम होने के नाते हर व्यक्ति की अपेक्षा रहती है कि उसके यहाँ सम्पन्न होने वाले प्रत्येक छोटे-बड़े आयोजन में श्री सोनी सम्मिलित हो और सोनीजी भी प्रत्येक व्यक्ति की इस आकांक्षा को सदैव पूरी करते है। भीलवाड़ा का छोटा-बड़ा कोई आयोजन हो या शादी-गमी, सोनी जी पूरे दिल से शामिल होते हैं। मिलने-जुलने वालों में अब यह मान्यता बन गई है कि उसके यहाँ और कोई आये या न आये पर सोनी जी अवश्य आयेंगे। यदि श्री सोनीजी के बारे में एक पंक्ति में कहा जाए तो वे समाज के वास्तविक गौरव हैं।

न केवल पूरा जिला बल्कि पूरा राजस्थान प्रान्त लाभान्वित हुआ। श्री सोनी वर्ष 1995 से अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा कार्यसमिति सदस्य हैं। 1998 से 2003 तक श्रीकृष्णदास जाजू स्मारक ट्रस्ट कलकत्ता के ट्रस्टी रहे। 14 जुलाई 2002 में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के उपसभापति (पश्चिमांचल) बने।

श्री सोनी के रचनात्मक कार्यों में प्रमुख रूप से सामूहिक विवाह, परिचय सम्मेलन, संस्कार शिविर, अभिरूचि शिविर, शिक्षा प्रसार, विद्यालय/छात्रावास/महेश भवनों का निर्माण, चिकित्सा शिविर, राजस्थान महेश सेवा निधि कोष की स्थापना से समाज की विधवा/परित्यक्ता बहनों को सहयोग प्रदान करना, मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्तियां प्रदान कराना, आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केन्द्र से प्रदेश के बन्धुओं को नया व्यापार या वर्तमान व्यवसाय को विकसित करने के लिए ऋण उपलब्ध कराना आदि है। आपने राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्षीय दायित्व का निर्वहन करते हुए सामाजिक संगठन के सशक्तिकरण के लिए प्रदेश के विभिन्न भागों में कई बार सघन भ्रमण कर संगठन को गतिशीलता प्रदान की और कार्यकर्ताओं के मनोबल को

बढ़ाया। समाज के लोगों को उनके हितार्थ चलाये जा रहे रचनात्मक कार्यों की जानकारी देकर भागीदारी सुनिश्चित कर लाभान्वित किया। 4-5 नवम्बर 2005 को राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में प्रादेशिक माहेश्वरी सम्मेलन का अनूठी उपलब्धियों के साथ ऐतिहासिक आयोजन वस्त्र नगरी भीलवाड़ा में सम्पन्न हुआ, जिसमें भारतवर्ष के ख्यातनाम समाजसेवी एवं बुद्धिजीवियों ने शिरकत कर समाज हित के महत्वपूर्ण विषयों पर चिन्तन किया तथा समाज को नई सोच व दिशा प्रदान की। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों तथा राजस्थान प्रदेश के विभिन्न स्थानों से लगभग दस हजार माहेश्वरी बन्धुओं ने हिस्सा लिया जो चिर स्मरणीय रहेगा।

शिक्षा और चिकित्सा को समर्पित

उद्योगपति श्री रामपाल सोनी ने अपने पूज्य माता-पिता की स्मृति को चिर स्थाई बनाने के लिए ''श्रीमती केसरबाई सोनी चेरिटेबल ट्रस्ट'' तथा ''श्री बद्रीलाल सोनी चेरिटेबल ट्रस्ट'' की स्थापना कर भीलवाड़ा में 30 करोड़ रूपये की लागत से शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य किया है। श्री सोनी ने अपनी माता के नाम दस करोड़ रूपये की लागत से श्रीमती केसरबाई सोनी हास्पिटल बनवाया। यह सौ पलंग वाला आधुनिक सुविधायुक्त हॉस्पिटल है, जहां रोगियों को निःशुल्क आउटडोर सुविधा के साथ-साथ समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रों व कस्बों में शिविर लगाकर

निःशुल्क परामर्श दिया जा रहा है। वहीं हॉस्पिटल में भी शिविर लगाकर चिकित्सा और ऑपरेशन सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। लम्बे समय से श्रीमती केसरबाई सोनी चेरिटेबल ट्रस्ट विभिन्न सहायता सेवाओं में अग्रणी है। श्रीमती केसरबाई सोनी शिक्षा न्यास से इस वर्ष 28 लाख रुपये की सहायता उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा हेतु छात्रों को उपलब्ध करवाई गई। श्री सोनी ने अपने पिताश्री के नाम से श्री बद्रीलाल सोनी चेरिटेबल ट्रस्ट जरिये के बीस करोड़ रुपये की लागत से एम.बी.ए. इंजीनियरिंग कॉलेज व स्कूल बनाकर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की सुविधा उपलब्ध करवाई। इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट के नाम से राज्य के इस अग्रणी इंजीनियरिंग कॉलेज में छात्रों को उपलब्ध विभिन्न उपकरण व सुविधाएं अपने आप में एक मिसाल है। इंजीनियरिंग कॉलेज व एम.बी.ए. कॉलेज में वर्तमान में 900 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। श्री बद्रीलाल सोनी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा भविष्य में वाणिज्य महाविद्यालय प्रारंभ किया जाएगा जिससे अजमेर, भीलवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ के जिलों में शिक्षा सुविधा में वृद्धि होगी। बदलते हुए परिवेश में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के समकक्ष होना नितांत आवश्यक है। राजस्थान में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु माताश्री के नाम से श्री केसरबाई सोनी शिक्षा न्यास की स्थापना पृथक से की। इस न्यास के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जावेंगी। इस योजना से ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाएँ उच्च शिक्षा हेतु अर्थाभाव से वंचित नहीं रहेंगी।

सम्मान और प्रशस्तियां

-वर्ष 1993 में इंस्टीट्यूट ऑफ मार्केटिंग मैनेजमेंट एल.आई.सी.के संयुक्त तत्वावधान में सर्वोत्तम मार्केटिंग एवं सुसंगठित संगठन के लिए बेस्ट अवार्ड सम्मान-तत्कालीन केंद्रीय श्रम एवं कल्याण मंत्री श्री सीतारामजी केसरी द्वारा प्रदान किया गया।

-वर्ष 1995 में 'भामाशाह' सम्मान से, राजस्थान सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री भैरोसिंहजी शेखावत द्वारा सम्मानित किया गया।

-वर्ष 1996 में 'उद्योग पत्र अवार्ड' तत्कालीन केंद्रीय कृषि मंत्री श्री बलरामजी जाखड़ द्वारा-औद्योगिक जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया।

-वर्ष 1999 में 'स्वतंत्रता स्वर्ण जयंती उद्योग विभूषण अवार्ड' इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्रियल डवलपमेंट दिल्ली द्वारा आयोजित 15वें आर्थिक विकास सम्मेलन में माननीय केंद्रीय श्रम मंत्री श्री सत्यनारायणजी जटिया द्वारा आर्थिक विकास एवं औद्योगिक उन्नयन हेतु प्रदान किया गया।

-वर्ष 2002 में व्यापार एवं उद्योग विकास संस्थान नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित द्वितीय सेमिनार में ''संगम स्पिनर्स'' भीलवाड़ा की डाइड सिंथेटिक यार्न उत्पादन में उत्कृष्ट गुणवत्ता में श्रेष्ठ घोषित होने पर केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री शांताकुमार द्वारा श्रेष्ठ गुणवत्ता इकाई सम्मान से अलंकृत किया गया।

-वर्ष 2003 में संगम स्पिनर्स को राजस्थान स्टेट प्रोडक्टीविटी काउंसिल जयपुर स्थित मोहनलाल सुखाड़िया चैंबर भवन में आयोजित समारोह में उद्योग मंत्री नरपतसिंह राजवी द्वारा संगम स्पिनर्स को टेक्सटाइल सेक्टर में सर्वश्रेष्ठ उत्पादक उपलब्धि से चयनित होने पर राज्यस्तरीय टेक्सटाइल्स एक्सीलेंसी अवार्ड 2003 प्रदान किया गया।

-दिनांक 26-1-05 को जिला उद्योग केंद्र की ओर से भीलवाड़ा उद्योग रत्न अवार्ड श्रीमान् कालूलाल जी गुर्जर ग्रामीण विकास व पंचायत राज्यमंत्री द्वारा प्रदान किया गया।

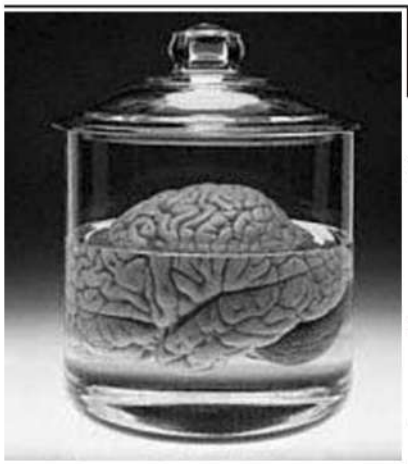

समाज-सरोकार

रखें दिमाग को चुस्त

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में तनावजनित बीमारियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। तनाव का सीधा असर कामकाज और व्यवहार पर तो पड़ता ही है इसका नकारात्मक प्रभाव स्मरण शक्ति पर भी होता है। यूँ तो हर उम्र के लोग तनाव से जन्मी बीमारियों से परेशान हो जाते हैं, लेकिन विद्यार्थियों के लिए तो यह एक बड़ी समस्या है। उनकी सफलता में स्मरण शक्ति परोक्ष रूप से एक महत्वपूर्ण आधार होती है। खासकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले इस बात से परेशान रहते हैं कि जो कुछ वे याद करते हैं वह देर तक उनके दिमाग में टिक नहीं पाता। दूसरे, कुछ छात्र पढ़े हुए को भूलने से खीझने भी लगते हैं। इस वृत्ति के मद्देनजर बाजार में याददाश्त बढ़ाने का दावा करने वाली बहुतेरी दवाइयाँ बिक रही हैं। ऐसी दवाइयों से स्मरण शक्ति कितनी बढ़ती है, यह तो प्रमाण सहित कह पाना कठिन है अलबत्ता डॉक्टरों के पास ऐसे रोगियों का लगातार आना लगा रहता है जो इस तरह की दवाइयों के सेवन के बाद इनके साइड इफैक्ट से पीड़ित होते हैं। बहरहाल नेशनल मेमोरी रिकॉर्ड होल्डर बिस्वरूप रॉय चौधरी ने हाल ही में गाँधी शांति प्रतिष्ठान में एक कार्यशाला में छात्रों को कुछ ऐसे टिप्स दिए जिनके माध्यम से याद की हुई चीजें देर तक मस्तिष्क में बनी रह सकती हैं।

बाजार में याददाश्त बढ़ाने का दावा करने वाली बहुतेरी दवाइयाँ बिक रही हैं। ऐसी दवाइयों से स्मरण शक्ति कितनी बढ़ती है, यह तो प्रमाण सहित कह पाना कठिन है अलबत्ता डॉक्टरों के पास ऐसे रोगियों का लगातार आना लगा रहता है, जो इस तरह की दवाइयों के सेवन के बाद इनके साइड इफैक्ट से पीड़ित होते हैं।

फायदेमंद टिप्स -

चीजें देर तक याद रहें इसके लिए उनके पास किसी तरह की दवाई नहीं है जिसका साइड इफैक्ट हो, बल्कि वे पढ़ाई की उस विधि की वकालत करते हैं जिससे कोई भी अध्याय या फॉर्मूला देर तक ज़ेहन में रह सके। बिस्वरूप के ये टिप्स मुख्य रूप से छात्रों के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं-

• सबसे पहले अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना जरूरी है क्योंकि अव्यवस्था तनाव का एक कारण है जिससे स्मरण शक्ति पर प्रतिकूल असर पड़ता है। जैसे सोना, उठना और भोजन आदि। इसके अलावा हल्का-सा व्यायाम।

• पहला महत्वपूर्ण बिंदु है, एसोसिएशन अथवा पढ़े हुए के साथ जुड़ाव। कई बार ऐसा होता है कि जो कुछ पढ़ा है, वह अगर एक बार में याद न आए तो उसे याद करने की सचेत होकर कोशिश ही नहीं की जाती, इसलिए पढ़े हुए से जुड़ाव का अहसास जरूरी है। जो कुछ याद करना है, उससे जुड़े कुछ बिंदुओं के माध्यम से भी कई चीजें याद आती हैं।

• आई मेमोरी। इसका संबंध छवि से है। हम जो कुछ देखते-सुनते हैं उसकी एक तस्वीर हमारे जेहन में खिंच जाती है इसलिए कोशिश हो कि जो कुछ पहली बार पढ़ा जा रहा है, साथ में उसे किसी आकार या तस्वीर में उतार लें। मिसाल के तौर पर किसी टेलीफोन नंबर और फूल में से फूल को याद करना सहज है क्योंकि उसकी छवि भी हमारे दिमाग में रहती है। वैसे, सुने हुए की तुलना में किसी देखी हुए चीज के याद आने के आसार 20 प्रतिशत अधिक होते हैं।

• यह भ्रांति ही है कि देर तक धुनी रमाने से काफी कुछ याद रहता है। देर तक पढ़ने या काम करने के दौरान हर 50 मिनट के बाद विराम आवश्यक है। यह विराम दस मिनट का हो सकता है लेकिन इन दस मिनटों में पूरा आराम जरूरी है।

• सचेत, सक्रिय रहने के लिए पानी जरूरी है। पढ़ाई के दौरान पानी पीते रहें।

• जो कुछ पढ़ा है, उसे 24 घंटे बाद दोहराएँ और सात दिन बाद फिर से रिवाइज करें क्योंकि पहली पढ़ाई के बाद चीजें 24 घंटे तक दिमाग में रहती हैं, विस्मरण की प्रक्रिया इसके बाद ही शुरू होती है।

• रुचि के द्वारा ही किसी चीज पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है इसलिए पढ़ाई में रोचकता जरूरी है।

• फोनेटिक्स पद्धति से हर अंक की एक तस्वीर बनाई जा सकती है जिससे चीजें देर तक याद

प्रार्थना ईश्वर से संवाद

■ रामेश्वर माहेश्वरी, इन्दौर

प्रार्थना द्वारा हम अपने अहंकार, पाप, कषाय, कल्मष एवं दु:खों के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं और अंतर्मन में छिपी हुईं दुर्भावनाओं, दुराग्रहों एवं समस्त कमजोरियों का मूलोच्छेदन कर सकते हैं। मन को साधने एवं शिक्षित करने की सबसे पहली सीढ़ी प्रार्थना है।

प्रार्थना हृदय की अंतःकरण की निश्छल पुकार है, जो सीधे परमात्मा तक पहुँचती है और बदले में प्रार्थी को कृतकृत्य करके छोड़ती है। अपने अहं को छोड़कर समर्पण भाव से विनम्र बनकर तथा मनोविकारों को तजकर परमेश्वर का नेतृत्व स्वीकार करने का नाम ही प्रार्थना है। मन की अतल गहराई से निकली हुई प्रार्थना, जिससे आत्म परिवर्तन की आस्था जुड़ी हुई हो, भगवान का सिंहासन हिला देती है। प्रार्थना के परिणाम ऐसे अद्‌भुत होते हैं जिन्हें चमत्कार कहने में कोई हर्ज़ नहीं है।

कृतज्ञता- ईश्वर प्रेम का स्वरूप है, बुद्धि का स्वरूप है। वह सर्वभूतमय है। ईश्वर का ज्ञान शाश्वत है जिसके लिए एकाग्रता, विश्वास की गहन ऊर्जा व तीव्रतर ललक की आवश्यकता है। कभी-कभी मन में यह प्रश्न उठता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, तो फिर हम प्रार्थना द्वारा उसको सूचना क्यों देते हैं? वास्तव में प्रार्थना द्वारा हम उस परमेश्वर की कृतज्ञता प्रकट करते हैं परंतु वाणी की अपेक्षा कृत्यों द्वारा कृतज्ञता का प्रदर्शन करना उत्तम है। प्रख्यात मनोवेत्ता डॉ. एमेली केडी के अनुसार प्रार्थना मात्र परमात्मा को धन्यवाद देने, कोरी कृतज्ञता व्यक्त करने या उससे कुछ याचना करने की प्रक्रिया का नाम नहीं है, यह वह मनःस्थिति है जिससे व्यक्ति शंका व संदेहों के जाल-जंजाल में से निकलकर श्रद्धा की भूमिका में प्रवेश करता है।

समर्पण - घटना 4 वर्ष पूर्व की है। मेरी माताजी को लकवा मार गया जिससे उनकी आवाज चली गई। मैंने डॉक्टरों से कहा-अम्मा की आवाज

प्रार्थना ईश्वर से संवाद

■ रामेश्वर माहेश्वरी, इन्दौर

प्रार्थना द्वारा हम अपने अहंकार, पाप, कषाय, कल्मष एवं दु:खों के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं और अंतर्मन में छिपी हुईं दुर्भावनाओं, दुराग्रहों एवं समस्त कमजोरियों का मूलोच्छेदन कर सकते हैं। मन को साधने एवं शिक्षित करने की सबसे पहली सीढ़ी प्रार्थना है।

प्रार्थना हृदय की अंतःकरण की निश्छल पुकार है, जो सीधे परमात्मा तक पहुँचती है और बदले में प्रार्थी को कृतकृत्य करके छोड़ती है। अपने अहं को छोड़कर समर्पण भाव से विनम्र बनकर तथा मनोविकारों को तजकर परमेश्वर का नेतृत्व स्वीकार करने का नाम ही प्रार्थना है। मन की अतल गहराई से निकली हुई प्रार्थना, जिससे आत्म परिवर्तन की आस्था जुड़ी हुई हो, भगवान का सिंहासन हिला देती है। प्रार्थना के परिणाम ऐसे अद्‌भुत होते हैं जिन्हें चमत्कार कहने में कोई हर्ज़ नहीं है।

कृतज्ञता- ईश्वर प्रेम का स्वरूप है, बुद्धि का स्वरूप है। वह सर्वभूतमय है। ईश्वर का ज्ञान शाश्वत है जिसके लिए एकाग्रता, विश्वास की गहन ऊर्जा व तीव्रतर ललक की आवश्यकता है। कभी-कभी मन में यह प्रश्न उठता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, तो फिर हम प्रार्थना द्वारा उसको सूचना क्यों देते हैं? वास्तव में प्रार्थना द्वारा हम उस परमेश्वर की कृतज्ञता प्रकट करते हैं परंतु वाणी की अपेक्षा कृत्यों द्वारा कृतज्ञता का प्रदर्शन करना उत्तम है। प्रख्यात मनोवेत्ता डॉ. एमेली केडी के अनुसार प्रार्थना मात्र परमात्मा को धन्यवाद देने, कोरी कृतज्ञता व्यक्त करने या उससे कुछ याचना करने की प्रक्रिया का नाम नहीं है, यह वह मनःस्थिति है जिससे व्यक्ति शंका व संदेहों के जाल-जंजाल में से निकलकर श्रद्धा की भूमिका में प्रवेश करता है।

समर्पण - घटना 4 वर्ष पूर्व की है। मेरी माताजी को लकवा मार गया जिससे उनकी आवाज चली गई। मैंने डॉक्टरों से कहा-अम्मा की आवाज

वापस ले आओ। डॉक्टरों ने कहा आवाज वापस आना बहुत मुश्किल और असंभव है। मैंने प्रतिदिन माँ को स्नान कराकर उनके चरण छूकर आँखें बंद करके एकाग्रचित्त होकर पूर्ण समर्पित भाव से प्रार्थना की 'हे परमेश्वर जीवन में आना-जाना लगा है, लेकिन मेरी माँ को अपने पास बुलाने से पहले एक बार उसकी आवाज लौटा दे'। मैं प्रतिदिन माँ से कहता- 'अम्मा गायत्री मंत्र बोलो'। मैं गायत्री मंत्र बोलता और अम्मा गूँगे की भाँति बोलतीं। एक दिन उस परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली और अम्मा धीरे-धीरे मेरा नाम व ईश्वर का नाम लेने लगी। माँ हम सबके साथ गायत्री मंत्र बोलतीं तो कभी सीताराम सीताराम सीताराम कहिए, जई विधि राखे राम ताहि विधि रहिए। एक दिन अम्मा इस संसार से चली गईं लेकिन मेरी आँखों में उस परमात्मा के प्रति आज भी आस्था व कृतज्ञता के आँसू भर जाते हैं एवं मेरी आत्मा कहती है- प्रार्थना ईश्वर से वार्तालाप करने की सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक प्रणाली है।

साधना - प्राण, चेतना व भावना के रूप में वही तो अपनी प्रेरक शक्ति बन बैठा है। ऐसे अभिन्न हृदय मित्र से, स्वजन-स्नेही से जी खोलकर बातें करने में संकोच क्यों होना चाहिए? उसके साथ जी खोलकर बातें करने में भय ही क्या है? प्रार्थना यदि भावपूर्ण है तो वह बिना पूजा-साधना के भी उतनी प्रभावशाली हो सकती है, जितनी कि विधि-विधान के साथ किए गए नियमित उपासना-साधना की। प्रार्थना एक प्रकार का प्रायश्चित है। आध्यात्मशास्त्रों में जितने प्रकार के प्रायश्चितों का उल्लेख है, उन सबमें प्रार्थना सबसे अधिक शक्तिशाली है। प्रार्थना द्वारा हम अपने अहंकार, पाप, कषाय, कल्मष एवं दुःखों के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं और अंतर्मन में छिपी हुईं दुर्भावनाओं, दुराग्रहों एवं समस्त कमजोरियों का मूलोच्छेदन कर सकते हैं। मन को साधने एवं शिक्षित करने की सबसे पहली सीढ़ी प्रार्थना है।

श्रद्धा

शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान भाव के भूखे हैं। उनके निकट भावना का महत्व सर्वोपरि है। श्रद्धा, विश्वास एवं भावना की गहनता ही प्रार्थना को फलदायी बनाते हैं। छादोग्योपनिषद में उल्लेख है 'यदेव श्रद्धाया जहोति तदेव वीर्यवत्तरं भवेति' अर्थात श्रद्धापूर्वक की गई प्रार्थना फलवती होती है। अतः भावना जितनी सच्ची, गहरी और श्रद्धापूर्ण होगी उतना ही उसका सत्परिणाम भी होगा। इसलिए शब्दों को रटने की, चिह्न पूजा करने की अपेक्षा समुचित श्रद्धा के साथ प्रार्थना की भावनाओं को अंतःकरण में बैठा अनुभव करते हुए ईश्वर के सम्मुख अपने मनोभाव प्रस्तुत करना चाहिए। भगवान सृष्टि के कण-कण में समाया है। वह रोम-रोम में भी समाया हुआ है। साँसों के साथ थिरकता हुआ वह बाहर आता एवं भीतर जाता रहता है। हृदय समेत समस्त नस-नाड़ियों में उसकी धड़कन और रक्त में उसी की गरमी काम कर रही है।

सत्य-असत्य

एक राजा था। वह जंगल में शिकार की खोज में भागता-भागता दूर निकल गया। उसे एक गर्भवती हिरणी नजर आई। शिकार की सारी मर्यादाओं और कानूनों को तोड़ राजा ने उस हिरणी का पीछा किया। जान बचाने के लिए हिरणी भी पूरी गति से भागी। आगे-आगे हिरणी और पीछे-पीछे राजा। कुछ देर बाद हिरणी उस राजा की आँखों से ओझल हो गई। एक ऋषि का आश्रम जंगल में था। जान बचाने के लिए हिरणी उसमें छिप गई। ऋषि बाहर तपस्या कर रहे थे। राजा ने अपना घोड़ा रोका और ऋषि से पूछा 'मुनिवर, हिरणी कहीं देखी है, क्या?' ऋषि ने मौनव्रत लिया हुआ था, परन्तु सच का आसरा नही छोड़ा। ऋषि ने राजा को इशारे से बताया की ''हिरणी आश्रम में हैं।'' राजा ने घोड़े से उतरकर हिरणी को आश्रम से बाहर निकाला और तलवार से उसका वध कर दिया। हिरणी के पेट से दो छटपटाते बच्चे निकले, राजा ने उन्हें भी मार डाला।

ऋषि को सच बोलने की सजा मिली - नरक।

राजा को कुकृत्य करने की सजा मिली - नरक।

शिक्षा - वह असत्य सत्य से भी बढकर है जिससे किसी के शील की रक्षा हो।

☺ हंसो ☺

एक व्यक्ति (दुकानदार से) - मुझे मच्छर मारने की दवा दीजिए।

दुकानदार ने उसे दवा दे दी।

व्यक्ति ने फिर पूछा - इससे मच्छर कैसे मरेंगे?

दुकानदार ने कहा - पहले मच्छर को पकड़ना फिर उसे गुदगुदी करना, जब वह हंसेगा तो तुम उसके मुंह में यह दवा डाल देना। वह मर जाएगा।

☺ ☺ ☹

अध्यापक (छात्र से) - बताओ आज तुमने कौन सा अच्छा काम किया?

छात्र - सर आज मैंने पांच लड़कों के साथ एक बुजुर्ग महिला को सड़क पार करवाया।

अध्यापक - शबाश, पर एक बुजुर्ग महिला को सड़क पार करवाने में इतने लड़कों की जरूरत क्यों पड़ी?

छात्र - क्योंकि वह सड़क के उस पार जाना ही नहीं चाहती थी।

कन्या सुरक्षा समाज की जरूरत

अनादिकाल से यही परंपरा रही है, पुत्र जन्म को एक जश्न की तरह लेना और कन्या जन्म का मातम मनाना। यह मान्यता ही कितनी मूर्खतापूर्ण है कि बेटा कुल दीपक होता है, वंश को आगे चलाता है लेकिन यह समझ क्यों नहीं है कि उसे पैदा करने के लिए एक स्त्री की ही जरूरत है।

■ श्रीमती मंगला पंड्या, उज्जैन

स्त्री में कितना प्रभावी सामर्थ्य है ''जग नियंता अगर एक उच्च कोटि का पेंटर है तो स्त्री उसकी सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है'' पूर्ण जग के निर्माण करने के बाद अत्यंत प्रभावी हाथों से और सबसे श्रेष्ठ ब्रश से निर्माण की गई पूर्ण कृति है स्त्री। फिर आपको यह अधिकार किसने दिया कि आप परमात्मा की इस अमूल्य धरोहर को अपने हाथों से मिटा दें। आप क्यूं भूल जाते हैं कि शक्ति के बिना शिव मृत समझा जाता है। जिस आदि शक्ति ने इस मानव मात्र का निर्माण किया और जिसकी वजह से यह सृष्टि कायम है उसे नष्ट करने के बाद आप कहाँ बचते हैं। इसलिए आज के समाज को आगे बढ़कर नारी सुरक्षा का आंदोलन चलाना चाहिए। लोगों में जागृति लाना चाहिए, अगर कन्या नहीं होगी तो आपका कुल दीपक किससे शादी करेगा और वो अपने वंश को आगे कैसे चलाएगा, अपनी सूनी कलाई पर राखी किससे बंधवाएगा, माता-पिता की स्नेह और आदर के साथ सेवा कौन करेगा।

21वीं सदी में मानव जहाँ ऊँची बुलंदियों को छू रहा है, चंद्रमा पर पहुँचने का जुगाड़ जमा रहा है, वहाँ बेटा-बेटी का यह फर्क मानव की दुर्बलता का प्रतीक है। जिस समाज में स्त्रियाँ बुलंदियों पर पहुँच रही हैं, आदमी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में अपना और अपने परिवार का गौरव स्थापित कर रही है वहाँ उनकी जिंदगी से खेलने की मानसिकता क्यों? मानव यह क्यों नहीं समझता कि वह अपने उद्‌गम को ही नष्ट कर देगा तो उसका निर्माण कैसे होगा।

आज के युग में जहाँ कन्याओं को कोख में ही मार दिया जाता है, उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, शादी के बाद अत्याचार होते हैं, ऐसे हर समाज में 'कन्या सुरक्षा' को धर्म का एक अंग बना देना चाहिए और आगे बढ़कर समाज में यह जागृति पैदा करना चाहिए। अगर कन्या नहीं होगी तो निर्माण नहीं होगा, माँ-बहन-बेटी-बहू नहीं होगी और अगर ये नहीं होंगी तो आप नहीं होंगें। धीरे-धीरे समाज की व्यवस्था बिगड़ जाएगी। वैसे भी सर्वे के अनुसार स्त्री लिंग का अनुपात काफी कम है। कहने को तो पुरुष प्रधान समाज स्त्री को देवी मानता है, पर हर पल उनका शोषण करता है। गर्भधारण से जन्म तक उसे कोई अधिकार न होना ही बेटियों के कत्ल का मुख्य कारण है। स्त्री को यह भी अधिकार नहीं होता कि वह कब माँ बनेगी और कितने बेटे-बेटियों

की। फिर दहेज समस्या हावी है ही और इस बारे में खामोशी कन्याओं पर भारी पड़ रही है।

पुरुष समाज आने वाले कल की भयावहता का अंदाज नहीं लगा पा रहा है। जब पुरुषों से स्त्रियों की संख्या कम होगी तो बहुपति प्रथा बढ़ेगी, सारे पुरुष खुशकिस्मत नहीं होंगे। उन्हें विवाह या जीवन साथी के बिना जीवन गुजारना पड़ेगा। भाइयों को बहनें नसीब नहीं होंगी। अराजकता फैलने में देर नहीं लगेगी। स्त्री सुरक्षा एक भयावह समस्या होगी, समाज को समझना होगा आज कन्या की सुरक्षा नहीं करके वो अपने लिये अत्यंत असुरक्षित भविष्य का निर्माण कर रहे हैं अतः समाज में यह जागृति पैदा करना होगी कि बालक-बालिका समान रहे, स्त्री को पुरुषों के बराबर हक मिले, शिक्षा, कैरियर, शादी, परिवार और प्रॉपर्टी में बराबर का हक मिले। लोग यह समझें कि स्त्री का अस्तित्व नहीं तो उनके जीवन को आगे बढ़ने का, इस सृष्टि को चलायमान रखने का उनके पास कोई आधार नहीं बचेगा।

मातृत्व स्त्री जीवन के यज्ञ की पवित्र पूर्णाहुति है पराक्रम का मातृत्व पुरुष के पास हो पर मातृत्व का पराक्रम सिर्फ स्त्री ही कर सकती है। मातृत्व का आनंद ब्रह्मानंद है क्योंकि वो निर्भित का अतुल आनंद है जो सहज साध्य नहीं, उसके लिए स्त्री को मरण प्राय वेदना सहनी पड़ती है। मातृत्व स्त्री की सहज सुंदर साधना है जिसका उसे अभिमान होता है फिर आपको यह अधिकार किसने दिया कि आप उसमें पक्षपात करें, अपनी मर्जी उन पर थोपें। कन्या भ्रूण हत्या के लिए उन्हें मजबूर करें, जो देना आपके हाथ में नहीं उसे लेना नियति के साथ क्रूर अपराध है। बड़ी-बड़ी बातें छोड़कर समाज अगर यह जागृति लाने में सफल हो, कन्या को जीने का अधिकार, बराबरी का दर्जा, हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन और उनकी सुरक्षा का जज्बा पैदा कर सके तो उस समाज को हर क्षेत्र में प्रगति, उन्नति, खुशहाली से कोई नहीं रोक सकता। इसलिए हर धर्म में समाज अपने कर्तव्य का पालन करें। लोगों में जागृति पैदा करे। कन्याओं को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक सुरक्षा प्रदान करे और एक खुशहाल समाज का निर्माण करें।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Praveen Bumb
Manish Daglia

KASTURI CHEMICALS

103, "DIAMOND TRADE CENTER", 1ST FLOOR, DIMOND COLONY, INDORE
PH. : 2542654, 2436644 FAX : 0731-2436644 MOBILE : 94253-53854

कैरियर

साक्षात्कार

कैसे करें तैयारी

■ नीरू माहेश्वरी, भोपाल

यदि हमें उद्देश्य की जानकारी मिल जाए तो लक्ष्य प्राप्ति में आसानी होती है। इस लिहाज से साक्षात्कार देने वाले तमाम प्रतियोगियों के लिए अपेक्षित है कि इस तथ्य को अच्छी तरह आत्मसात कर लें कि आखिर साक्षात्कार क्यों लिया जाता है। यदि 'क्यों' की जानकारी मिल जाए तो ''कैसे'' की जानकरी प्राप्त कर पता लगाया जा सकता है कि उन्हें 'क्या' तैयारी करना होगी। वास्तव में देखा जाए तो साक्षात्कार द्वारा प्रतियोगी की आवेदित पद हेतु क्षमता का सही-सही आकलन किया जाता है। चूँकि यह आकलन संबंधित विषयों के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है इसलिए प्रत्याशियों से अपेक्षा की जाती है कि वे सतही ज्ञान के बल पर भ्रामक उत्तर न दें। बेहतर तो यही होगा कि राज्य सेवा के अंतर्गत उपलब्ध पदों के लिए आवेदन करते समय ही उन पदों की प्रकृति तथा आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त कर उसकी पूर्ति हेतु सभी संभावित क्षेत्रों का ज्ञान अर्जित करें।

वास्तव में देखा जाए तो साक्षात्कार द्वारा प्रतियोगी की आवेदित पद हेतु क्षमता का सही-सही आकलन किया जाता है। चूँकि यह आकलन संबंधित विषयों के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, इसलिए प्रत्याशियों से अपेक्षा की जाती है कि वे सतही ज्ञान के बल पर भ्रामक उत्तर न दें।

सही जवाब

अकसर देखा गया है कि साक्षात्कार के दौरान प्रत्याशी से पहला सवाल यही किया जाता है कि उसने सिविल सेवा का क्षेत्र ही क्यों चुना या आवेदित पद के लिए वह क्यों आवेदन कर रहा है। प्रत्याशियों के पास इसका सौद्देश्यपूर्ण जवाब होना चाहिए। महज देशसेवा, समाजसेवा जैसे उत्तर पर्याप्त नहीं होते हैं। जब तक प्रत्याशियों को इस बात का ज्ञान न हो कि साक्षात्कार में किस तरह के प्रश्न पूछे जाएँगे या क्या किया जाएगा तब तक वे इसकी पूर्णरूपेण तैयारी भी नहीं कर पाएँगे। आमतौर पर सिविल सेवा परीक्षा के साक्षात्कार विश्वविद्यालयीन प्रायोगिक परीक्षाओं की मौखिक परीक्षाओं (वाइवा) जैसा नहीं होता है और न ही अन्य नौकरियों के लिए, लिए जाने वाले साक्षात्कार की तरह प्रत्याशियों की खिंचाई वाला होता है।

व्यवहारिक ज्ञान

साक्षात्कार के समय केवल विषयगत ज्ञान की जानकारी नहीं ली जाती। अपने प्रदेश, उसके राजनीतिक, सामाजिक, भौगोलिक स्थिति की जानकारी ज्यादा से ज्यादा होनी चाहिए तथा समसामयिक विषयों की जानकारी के साथ-साथ समस्याओं के समाधान की भी जानकारी यथेष्ठ मानी जाती है। साक्षात्कार के लिए बौद्धिक ज्ञान जितना आवश्यक है, उतना ही व्यावहारिक ज्ञान भी जरूरी है क्योंकि सिविल सेवा से जुड़े सभी पद लोकहित तथा जनसंपर्क के अंतर्गत आते हैं। लिहाजा इन पदों के प्रत्याशियों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनका दृष्टिकोण लोकहित तथा कल्याणकारी भावनाओं के अनुरूप हो। बुद्धिमत्ता, व्यवहार के अलावा प्रत्याशी के हावभाव, वेशभूषा तथा प्रतिक्रिया का भी साक्षात्कार में आकलन किया जाता है। आकर्षक व्यक्तित्व तथा सौम्य व्यवहार साक्षात्कार में सफलता की कुंजी माने जाते हैं।

आत्मविश्वास

साक्षात्कार के दौरान उत्तर देते समय आत्मविश्वास तथा निश्चित दृष्टिकोण सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। यदि प्रश्न का विश्लेषण कर तर्कपूर्ण जवाब दिए जाएँ तो साक्षात्कार लेने वाला निश्चित ही प्रभावित होता है। हाँ, इसके लिए ज्यादा ज्ञान बघारने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपके ज्ञान के प्रमाण स्वरूप मुख्य परीक्षा के प्राप्तांकों की सूची उनके पास पहले ही उपलब्ध होती है। साक्षात्कार में बड़बोलेपन की बजाय मितभाषी प्रत्याशी के चयन की संभावना ज्यादा होती है क्योंकि वह साक्षात्कार हेतु निर्धारित 15-20 मिनट में साक्षात्कार लेने वालों के ज्यादा से ज्यादा प्रश्नों के जवाब देकर उन्हें संतुष्ट कर सकता है।

इसके बोर्ड में बैठने वाले सभी सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ होने के साथ ही साक्षात्कार लेने के प्रति अत्यंत गंभीर होते हैं। वे प्रत्याशियों को परेशान कर उलझाने के स्वाभाविक तरीके से बातचीत के लहजे में साक्षात्कार लेते हैं। उनका उद्देश्य प्रत्याशियों की प्रतिक्रिया, व्यवहार, आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता, सकारात्मकता, नकारात्मकता, अभिरुचि, निर्णय लेने की क्षमता, उसकी पृष्ठभूमि आदि का आकलन करना होता है। वे टालमटोल कर भ्रामक जवाब के बजाय ईमानदारीपूर्वक प्रत्याशियों द्वारा प्रश्न के उत्तर न जानने के जवाब को ज्यादा तरजीह देते हैं क्योंकि उन्हें भी पता होता है कि कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञाता नहीं होता है। ✪

माहेश्वरी लिखने की अपील

■सुशील माहेश्वरी, गाजियाबाद

कितना अद्भुत, अद्वितीय, सुंदर एवं प्यारा शब्द है, माहेश्वरी जो स्वयं माता पार्वतीजी का ही एक उपनाम है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम इस गौरवान्वित जाति में पैदा हुए। माता पार्वतीजी ने हमारे पूर्वजों को उनकी गलती पर दिए गए शाप से मुक्त करते हुए अपनी ही ऊँगली के रक्त के छींटे से जिंदा किया और विश्व में अपनी ख्याति बनाने का भी आशीर्वाद दिया। जिसे हम आज व्यावहारिक रूप से देख भी रहे हैं। माहेश्वरी जाति किसी भी क्षेत्र में चाहे वह उद्योगपति, उच्च पेशेवर, उच्च राजनीतिक ज्ञानी हो में कम नहीं हैं। बस है कमी तो एक कि साधारण आदमी नहीं पहचानता कि आखिर माहेश्वरी हैं कौन। कोई समझता है शर्मा तो कोई क्षत्रिय या अन्य जाति। इसका मूल कारण है तो यही कि हम लोग अपने नाम के आगे अपनी खाँप या गोत्र लगाते हैं जिसको पढ़कर आदमी नहीं समझता कि अमुक माहेश्वरी है। जरा सोचें कि यदि बिड़ला, मूंदड़ा, बांगड़, लखोटिया, राठी, मालपानी, कोठारी, बाहेती, लाहोटी, बजाज, भंडारी, धूत, तापड़िया, तोषनीवाल, टावरी, झंवर, जाजू, गाँधी, डागा, काबरा, सारड़ा और सोमानी आदि उद्योगपति या महान विभूतियों (जिनको आम आदमी व्यक्तिगत नाम से जानता है) ने अपने नामों के आगे माहेश्वरी लिखा होता तो आज हमारे समाज की पहचान कुछ और ही होती क्योंकि आज जन सामान्य उपरोक्त विभूतियों को किसी न किसी रूप में पहचानता है। कमी है तो बस यही कि वह नहीं जानता कि ये लोग भी माहेश्वरी हैं। पता नहीं क्यों मेरा मन माहेश्वरी शब्द आते ही अत्यंत विभोर हो जाता है। मैं यह नहीं कहता कि हम लोग गौत्र न लगाएं। मैं तो यही अनुरोध करूँगा कि अपनी जाति की प्रसिद्धि के लिए माहेश्वरी शब्द भी गौत्र के आगे या पीछे अवश्य लगाएं जिससे हमारे समाज की चाँदनी में और चार चाँद लग सकें। ✪

प्ले स्कूल फॉर किड्स

■ डॉ. हरीशकुमार सिंह, उज्जैन

भागमभाग की जिंदगी में, जहाँ पति-पत्नी दोनों के द्वारा कमाने प्रचलन बढ़ा है वहीं पति-पत्नी दोनों के कामकाजी होने के कारण, घर पर छोटे बच्चों की देखभाल की विकट समस्या भी सामने आ रही है। बच्चों की उचित देखभाल दिन के समय में हो जाए इसके लिए एक बहुत बड़ा वर्ग चिंतित रहता है। कुछ लोग काम पर जाते समय, आया को घर पर छोड़कर जाते हैं तो कुछ बच्चों को, बड़े-बूढ़ों के हवाले भी करते हैं। मगर पति-पत्नी को सुकून नहीं मिल पाता, क्योंकि जहाँ एक ओर अनजान आया के भरोसे घर छोड़ना खतरे से खाली नहीं होता वहीं दूसरी ओर अकेले रहने की आदत ने, बड़े-बूढ़ों को भी अलग कर दिया है। ऐसे में प्ले स्कूल फॉर किड्स एक बेहतर और उत्तम विकल्प के रूप में सामने आता है।

कैसे करें तैयारी- बच्चों के लिए प्ले स्कूल के होने का मतलब है कि जब बच्चे, माँ-बाप से दिन में दूर रहें तो उन्हें वैसा ही घर सा माहौल, लाड़-प्यार और खान-पान मिले जिससे वे प्ले स्कूल में अपना समय, आराम से गुजार सकें। छोटी उम्र से 12 वर्ष तक के बच्चे, प्ले स्कूल के वातावरण में घुल-मिल सकते हैं। आमतौर पर प्ले स्कूल में बच्चों को छोड़ने का आशय उनकी 'डे-केयर' से ही है। प्री-स्कूल एडमिशन की तैयारी भी पाँच वर्ष के बच्चों के लिए करवाई जा सकती है। शुरुआती तौर पर, आप अपने घर के किसी एक बड़े कमरे या खाली मकान को प्ले स्कूल बनाकर, अधिक से अधिक एक लाख रुपए तक निवेश कर प्ले स्कूल खोल सकते हैं।

सही टीचर्स की तलाश- प्ले स्कूल में छोटे बच्चे ही दिनभर के लिए आएँगे अतः यदि आप स्वयं, प्ले स्कूल संभाल सकती हैं तो ठीक अन्यथा एक-दो टीचर्स रख सकती हैं। टीचर की भूमिका काफी धीरज भरी होगी क्योंकि जो बच्चे आएँगे वे अलग-अलग वातावरण से आएँगे। टीचर्स को चाहिए कि बच्चों को कुछ समय क्रियाशील रखें तथा स्वयं एक्टिव टीचर के रूप में नजर आए। छोटे बच्चों को कब सोना है, कब उन्हें दूध-खानपान देना है इसका भी ध्यान रखना होता है। एक-दो सफाई महिला कर्मचारी भी रखी जानी चाहिए जिससे बच्चों को साफ रखा जा सके। बच्चों को खुला माहौल मिलना चाहिए, उन्हें नर्सरी राईम्स, प्रेयर आदि सिखलानी चाहिए।

महिलाएँ प्ले स्कूल खोलकर अपना व्यवसाय शुरु कर सकती हैं। शिक्षित महिलाएँ ऋण लेकर भी प्ले स्कूल खोल सकती हैं। यह तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है, अतः इस व्यवसायिक क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं।

कामयाबी के टिप्स

आप डे-केयर की फीस, अपने शहर के हिसाब से तय करें। आम तौर पर एक हजार रु.प्रतिमाह से पच्चीस सौ रुपए प्रतिमाह तक डे-केयर के रूप में ले सकते हैं। यदि बच्चों के आहार की व्यवस्था भी प्ले स्कूल को करनी है तो, पाँच सौ से एक हजार रुपए अतिरिक्त लिए जा सकते हैं। बच्चों को भागदौड़ करने एवं खेलने के लिए प्र्याप्त स्थान होना चाहिए। वातावरण स्वच्छ एवं हवामय होना चाहिए। टीचर्स को बच्चों का मनोविज्ञान समझना आना चाहिए। बच्चा प्ले स्कूल में खुश रहे इसका ध्यान रखना चाहिए। बच्चों के माता-पिता से मिलकर जानकारी प्राप्त करते रहना चाहिए कि उन्हें व उनके बच्चे को, आनंद आ रहा है या और कुछ चाहिए।

महिलाएँ प्ले स्कूल खोलकर अपना व्यवसाय चुन सकती हैं। शिक्षित महिलाएँ ऋण लेकर भी प्ले स्कूल खोल सकती हैं। अखबारों में या स्थानीय चैनल पर विज्ञापन देकर प्ले स्कूल के बारे में प्रचारित करें। धीरे-धीरे 'प्ले स्कूल' का क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है तथा यह आपकी व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर है।

कैसे सजाएँ प्ले स्कूल- घर के कमरे को जिसे प्ले स्कूल बनाना है या फिर पूरे भवन में जहाँ प्ले स्कूल चलाना है, उसे बच्चों के अनुकूल चटख रंगों से सजाना चाहिए। रंग-बिरंगे खिलौने, सुंदर फर्श और वातावरण, बच्चों को खुशनुमा बनाने वाले होना चाहिए। प्यारे जानवरों की तस्वीरें, दीवारों पर ही चित्रित करवा देना चाहिए।

रखें सेहत और सुरक्षा का ख्याल- माँ-बाप बड़े ही विश्वास से, अपने बच्चों को प्ले स्कूल छोड़कर जाते हैं अतः उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी प्ले स्कूल पर होती है। प्ले स्कूल की दीवारों पर बिजली के बोर्ड, स्विच इत्यादि काफी ऊँचे या बच्चों की पहुँच से दूर होना चाहिए। खिलौने ऐसे होने चाहिए जिससे उन्हें चोट न पहुँचे। बीमारी की स्थिति में देखभाल के लिए डॉक्टर के संपर्क में रहें जो कॉल करने पर प्ले स्कूल आकर बच्चे को देख सके। इमरजेंसी के लिए बच्चे के अभिभावकों का फोन नं.पता आदि लेकर रखें। सभी बच्चों के लिए तौलिए अलग-अलग रखें। उनका खाना और नाश्ता यदि घर से ही दिया जाता हो तो समय पर दें। अलग-अलग उम्र के बच्चों को अलग-अलग वर्ग बनाकर, उनकी उम्र के अनुसार उन्हें दिनभर व्यस्त और मस्त रखने के मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक उपाय करें। ✪

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

PARVATI ENTERPRISES

30, Nagarchi Bakhal (Behind Bada Sarafa), INDORE - 452 002
Ph. : Off. 2544745, 2531727 Fax : 0731-2539285

आत्मा को दीजिये आध्यात्मिक खुराक

आत्मा और आध्यात्म शब्द इतने पवित्र हैं जिनके सहारे भगवान तक पहुँचा जा सकता है। परमात्मा को पाने की प्रथम सीढ़ी है - आध्यात्म। आज के इस दौर में जब हर वर्ग पर आधुनिकता हावी होती जा रही है तब बढ़ते इस परिवेश में आध्यात्म और आत्मा के 'अ' को समझने के लिये या तो हमारे पास वक्त की कमी है या महसूस करने की समझ कम है। आध्यात्म और आत्मा ये दोनों शब्द अलग-अलग लगते हैं लेकिन वे अलग होकर भी हमें एक ही अर्थ एवं उद्देश्य की ओर खींचते हैं और वो है परमात्मा।

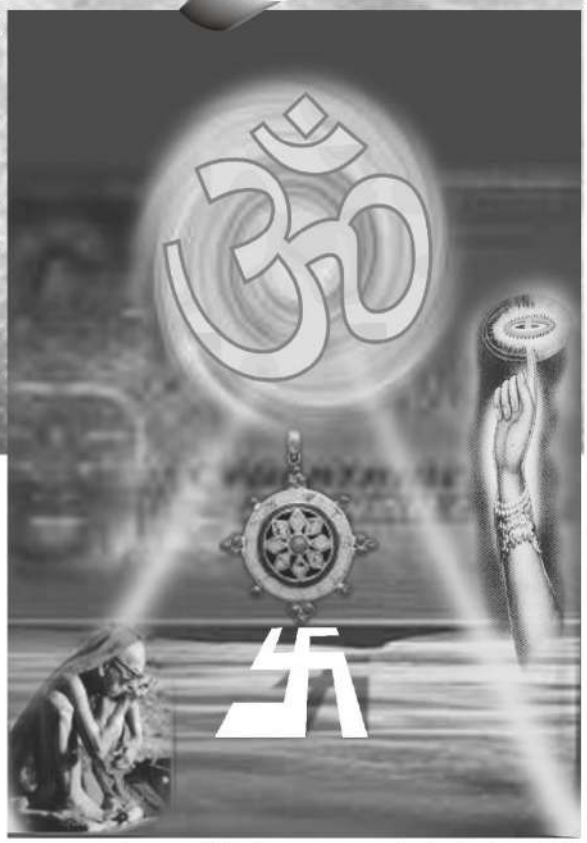

■ गोपिका मंत्री, खण्डवा

आध्यात्म शब्द अधि तथा आत्म के योग से निर्मित हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'आत्मा में'। संसार और मोह-माया में लिप्त होकर हम इस पवित्र और मोक्षरूपी शब्द को दरकिनार कर चुके हैं। जिस दिन हमारी 'आत्मा में' आध्यात्म घर कर गया उस दिन हमें इस संसार के मोह से छूटने में क्षण भर भी नहीं लगेगा।

शास्त्र कहते हैं मात्र 'मैं' शब्द के कारण ही हम जीवन के निरपेक्ष और असल रूप को नहीं पहचान पाते। मैं इस जग का, जग वाले मेरे, ये मेरा घर, ये मेरा पैसा। आखिर ये मैं कौन है? जिस दिन मैं के मद में डूबे व्यक्ति को ''मैं'' का स्वरूप स्पष्ट हो गया उस दिन उसके जीवन में सत्य, शांति और विवेक का प्राकट्य भी आसान हो जाएगा। यदि 'मैं' को ही अपना सब कुछ मान लें तो जीवन मुक्ति का अनुभव होना बहुत कठिन है। आध्यात्म, आत्मचिंतन सिखाता है। यह परमात्मा की दुनिया से हमें जुड़ना और उसकी दुनिया में स्वयं का स्थायित्व बनाए रखना सिखाता है। आध्यात्म के लिये ज्ञान जरूरी है। यहाँ ज्ञान का तात्पर्य भूगोल, इतिहास या इस तरह के अन्य विषयों से नहीं है। यहाँ ज्ञान का अर्थ बहुत गहरा है जिसे आत्मज्ञान कहते हैं। उपनिषद कहते हैं कि जो लोग जीवन में स्वयं की आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं उनका जीवन सार्थक हो जाता है।

श्रीकृष्ण ने उपनिषद् में कहा है - **'स्वभावोअध्यात्मुच्यतो'**। स्वभाव क्या है? यह कोई विशेष अभ्यास या सीखने की चीज नहीं है। स्वभाव शब्द दो शब्दों स्व तथा भाव के योग से मिलकर बना है। यहाँ स्व से तात्पर्य स्वयं (आत्मा) तथा भाव से तात्पर्य आत्मा के भाव से है। अर्थात् आत्मा के भाव या आत्मज्ञान ही स्वभाव है। आत्मा का ज्ञान ही समस्त ज्ञानों से ऊपर है जिसकी प्राप्ति द्वारा ही हम संसारी जीव मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

गीता के पवित्र ग्रंथ में जब अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं की भगवान ब्रह्म क्या है? आध्यात्म क्या है? तब श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं- यह वह ''शब्द'' है जो क्षरता नहीं, घटता नहीं, बढता नही। अपरिणामी, चिरकारक में एकरस, निर्विकार पदार्थ जो वास्तव

में है वही ब्रह्म है। श्रीकृष्ण कहते हैं - शरीर के बंधन के आरंभ से मोक्ष तक परमात्मा भाव प्राप्ति तक जो भाव होता है वह आध्यात्म भाव है। अभी हम सब ''मैं हूँ'' में डूबे हुए हैं लेकिन जिस दिन ''मैं आत्मा हूँ, मैं आध्यात्म से जुड़कर भगवान को पाने के लिए जन्मी हूँ'' की भावना या समझ आ जाएगी वह क्षण जीवन का सर्वोच्च सुख देने वाला होगा।

एक विद्वान के. नंद व्यास ने मर्मस्पर्शी कहानी लिखी है एक ब्राह्मण दरिद्रता के कारण अत्यंत क्लांत होकर एक राजा के यहां भिक्षा मांगने हेतु गए। उस नगर का राजा बड़ा चतुर था तथा वह सच्चे, वैरागी और योग्य ब्राह्मणों को ही दान दिया करता था। सुपात्र-कुपात्र की परीक्षा के लिए उसने महल के चार दरवाजे बना रखे थे। इन्हें पार करने वाला साधु सुपात्र समझा जाता था तथा उसे पर्याप्त दान मिलता था।

ब्राह्मण ने महल के प्रथम द्वार में प्रवेश किया ही था कि एक वेश्या निकलकर सामने आई। उसने ब्राह्मण से राजमहल में प्रवेश करने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने उत्तर दिया - धन याचना के लिए राजाजी के पास जाना चाहते हैं। वेश्या ने कहा कि इस दरवाजे से आप तब ही अंदर जा सकते हैं, जब मुझसे रमण कर लें अन्यथा दूसरे दरवाजे से जाइए। ब्राह्मण को वेश्या की बात स्वीकार न हुई। अधर्माचरण करने की अपेक्षा दूसरे द्वार से जाना उसने पसंद किया। वहां घुसने वालों को मांसाहार करना पड़ता था। वहां से भी वह लौट आया। तीसरे द्वार पर मदिरा की बोतल और प्याली रखी हुई थी। प्रहरी पहले शराब पिलाकर परीक्षा लेता था। वहां से भी वह उल्टे पैर लौट आया।

चौथे द्वार पर पहुँचकर ब्राह्मण ने देखा की वहाँ जुआ हो रहा है। जो लोग जुआ खेलते हैं, वे ही अंदर घुस पाते हैं। ब्राह्मण ने सोचा यह तो मामूली बात है। चारों दरवाजों पर धर्म विरोधी शर्तें हैं, यहाँ तो पैसे की मुझे जरुरत है। एक ओर धर्म और दूसरी ओर पाप का घमासान युद्ध उसके मन में होने लगा। ब्राह्मण ने सोचा- थोड़ा सा जुआ खेल लें, तनिक सा पाप होगा। विचारों को विश्वास के रुप में बदलते देर न लगी। वह जुआ खेलने लगा। एक रुपये के दो रुपए हुए, दो के चार तथा चार के आठ। जीत पर जीत होने लगी। ब्राह्मण राजा के पास जाना भूल गया और एकचित्त होकर जुआ खेलने लगा। शाम तक हजारों रुपयों की गठरी बांधकर चल दिया। दिन भर से खाया कुछ भी न था। भूख जोर से लग रही थी। पास में कोई भोजन की दुकान न थी। ब्राह्मण ने दूसरे द्वार पर जाकर मांस का भोजन किया। वह मुफ्त मिलता था। मांस से कामवासना उद्दीप्त हो उठी। अब उन्हें मद्यपान करने की जरुरत प्रतीत हुई। आगे दरवाजे पर जाकर शराब की कई प्यालियाँ चढाई।

धन का, मांस का, मद्य का, तिहरा नशा उन पर चढ़रहा था। सुरा के बाद सुंदरी का ध्यान आना स्वाभाविक था। ब्राह्मणजी पहले दरवाजे पर आकर वेश्या के यहां जा विराजे। वेश्या ने उन्हें संतुष्ट किया और पुरस्कार स्वरुप सारे रुपये ले लिए। वेश्या ने दूसरे दिन उन्हें घर से निकाल दिया। राजा तक सारी सूचना पहुँच चुकी थी। ब्राह्मण ने पुनः वही करना चाहा किंतु उन्हें मार-पीटकर निकाल दिया गया।

कथा का तात्पर्य है कि ब्राह्मण ने कुसंगति, लालसा और चाह के वशीभूत होकर ही एक के बाद एक कई पाप किये। आज के इस युग में मनुष्य में पशुता क्यों प्रवेश कर रही है? इसका सीधा और सरल सा कारण है हमारी आध्यात्म से विमुखता। इसी कारण दिन-ब-दिन मानव शारीरिक वासनाओं, व्यवसन प्रवृत्तियों, सांसारिक लालसाओं, नीचतापूर्ण, ओछे विचारों में उलझता जा रहा है। देश और समाज में पशुत्व व्यवहारी अधिक हो गए हैं तथा ऐसे में क्या सामाजिक प्रगति सम्भव है? आध्यात्म हमें यही सिखाता है कि मनुष्यता या आत्मत्व में वे सब तत्व मौजूद हैं जिससे मानव की प्रगति हो। आध्यात्म कहता है सबसे पहले मनुष्य बना जाए। यदि मनुष्य बन गए तो दिव्य परमात्मा की प्राप्ति क्षण में हो जाएगी। यदि आप भी परमात्मा से जुड़ना चाहते हैं तो आध्यात्म का आहार लेना अभी से शुरु कर दें। ✪

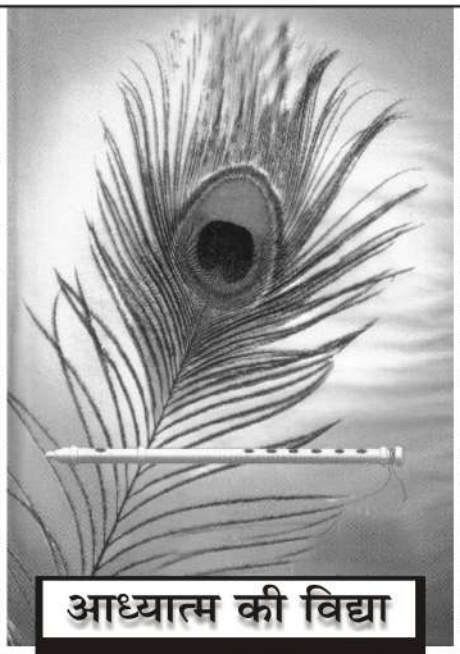

आध्यात्म की विद्या

आध्यात्म की विद्या स्वतंत्र रहना सिखाती है। पूर्ण रुप से अपने परमात्मा या गुरु के चरणों में निष्कपट भाव से लीन रहना सिखाती है। विद्वान और ज्ञानी कहते हैं की आजकल व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में पारंगत व माहिर होते जा रहे हैं। यदि कोई नया आविष्कार करके दुनिया को चंद्र और मंगल ग्रहों की सैर करा देता है तो लोग उसे महापुरुष समझने लगते हैं किंतु आध्यात्म ज्ञान जिस भाग्यशाली को प्राप्त हुआ है, वह मनुष्य तथाकथित इन सभी महापुरुषों से श्रेष्ठ है। भगवान श्रीकृष्ण, बुद्ध और ईसा के नाम पर कितने ही सर जमीन पर झुकते हैं। आत्मज्ञान को पाना है तो किसी भी तरह, चाहे वह जप, तप, साधना, दान, पूजा-पाठ हो, को माध्यम बनाएं और पूरी तल्लीनता से उसमें डूब जाएं। आध्यात्म की प्राप्ति वह व्यक्ति कभी नही कर सकता जो अभिमानी, कुसंगति में लिप्त, लालसा और चाहों में घिरा हो और सत्संग से दूर भागता हो क्योंकि ये तत्व संसारी जीव की बेडियां होते हैं जिनमें वह बंधा रहता है।

भगवान मेरा जीवन, सद्धर्म के लिए हो।
हो जिंदगी तो लेकिन उपकार के लिए हो।
सुंदर स्वभाव मेरा दुश्मन का मन रिझा ले।
वह देखते ही कह दे, तुम प्यार के लिए हो।
हममें विवेक जागे, हम धर्म को न भूलें।
चाहे हमारी नैया मझधार के लिए हो।

ईश्वर के अस्तित्व को लेकर हमेशा बहस चलती रही है। जहाँ तक ईश्वर के अस्तित्व का सवाल है वह संदेह से परे है। वह सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, दुःख, सुख, कामना, संकल्प एवं विकल्प से भी परे है। वह कारणों का भी कारक है। उसके साकार, निराकार, सगुण, निर्गुण स्वरूप एवं प्रकृति का प्रश्न है, यह भक्तों की दृष्टि है।

ईश्वर मनुष्य की मान्यता का मोहताज नहीं

शेक्सपियर ने कहा था कि मनुष्य, ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है और आज यह भ्रांत मनुष्य कह रहा है कि ईश्वर मनुष्य का सबसे बड़ा आविष्कार है जो उसने डर से बचने के लिए किया है।

■ बृजमोहन समदानी, मनासा

हमारे ऋषियों एवं मनीषियों ने अनंत कोटी ब्रह्मांडों का उल्लेख किया है। वैज्ञानिक खोजों एवं अंतरिक्ष में स्थापित दूरबीनों से हमारे ब्रह्मांड के असीम विस्तार की थोड़ी सी वैज्ञानिक जानकारी हमें उपलब्ध हुई है जिसने ब्रह्मांड के बारे में उपलब्ध शास्त्रीय जानकारी की पुष्टि की है। पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि जैसे कई ग्रह हमारे सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इन ग्रहों के अपने उपग्रह हैं जो इन ग्रहों के चक्कर लगाते हैं। हमारी आकाशगंगा में करीब बीस हजार करोड़ सूर्य जैसे तारे हैं एवं इसका फैलाव करीब एक लाख प्रकाश वर्ष है (करीब तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से प्रकाश द्वारा एक वर्ष में तय दूरी को प्रकाश वर्ष कहते हैं।) ऐसी अरबों-खरबों आकाशगंगाएँ हमारे ब्रह्मांड में हैं जिसका फैलाव अभी तक करीब 1400 (चौहद सौ) करोड़ प्रकाश वर्ष माना जाता है। हमारा सूर्य अपने परिवार सहित अपनी आकाशगंगा के केंद्र से करीब बत्तीस हजार प्रकाश वर्ष दूर होकर नौ लाख किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आकाशगंगा के केंद्र का चक्कर पच्चीस करोड़ वर्ष में पूरा करता है। हमारी अपनी आकाशगंगा करीब 50 किमी प्रति सेकंड की रफ्तार से घूम रही है। ब्रह्मांड में कुछ आकाशगंगाएँ पचास हजार किमी प्रति सेकंड से भी अधिक रफ्तार से भाग रही हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार पदार्थ को शून्य में नहीं बदला जा सकता न ही शून्य से पदार्थ बनाया जा सकता है केवल पदार्थ का रूप परिवर्तित किया जा सकता है। अब सवाल यह उठता है कि ब्रह्मांड में यह अपरिमित पदार्थ आया कहाँ से? उपग्रहों द्वारा ग्रहों के, ग्रहों द्वारा नक्षत्रों के, नक्षत्रों द्वारा आकाशगंगाओं के तथा आकाशगंगाओं द्वारा ब्रह्मांड में चक्कर लगाने के पीछे गुरुत्व बल की खोज तो वैज्ञानिकों ने की लेकिन इतने विशाल ब्रह्मांड को पकड़े रखने वाला यह असीम बल किसने पैदा किया? यह कौन प्रदान कर रहा है? स्वाभाविक है इन सबके पीछे एक परम शक्ति है जिसे हम भगवान प्रकृति या अन्य किसी भी नाम से जानते हैं।

हम यह तो जानते हैं कि तत्वों का सूक्ष्मतम भाग परमाणु होता है और परमाणु भी अति सूक्ष्म कणों न्यूट्रॉन, फोटॉन, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और पॉजीट्रॉन आदि से मिलकर बना होता है। यह कुछ अत्यंत सूक्ष्म कण विभिन्न संख्या एवं तरीके से मिलकर करीब 115 तरह के तत्व बनाते हैं और विभिन्न भौतिक एवं रासायनिक गुण संपन्न यह कुछ तत्व रासायनिक क्रिया द्वारा लाखों प्रकार के भिन्न-भिन्न गुण धर्मों से युक्त यौगिक बनाते हैं। लाखों प्रकार की विभिन्न जैविक प्रजातियों के निर्माण का आधार भी यह तत्व एवं यौगिक ही है।

किस पदार्थ की रचना कैसी है एवं उसके गुण धर्म क्या है? यह गुण धर्म किसने निश्चित किए? पदार्थ में गुण आए कहाँ से? पदार्थ के गुण धर्म का एक रोचक मामला यह है कि हाइड्रोजन स्वयं उच्च ज्वलनशील है, ऑक्सीजन जलाने में सहायक है। एक जलती है, दूसरी जलाती है पर इनसे पैदा होने वाला पानी वह आग बुझाता है। वैज्ञानिक जेनेटिक कोड से पानी के गुण धर्म मिलान नहीं कर सकते हैं। यह कमाल प्रकृति का ही है। सृष्टि ऐसे ही आश्चर्यों से भरी पड़ी हैं जहाँ जाकर हमारे तर्क एवं ज्ञान कार्य नहीं करते। वह कौन सी शक्ति है जो सूक्ष्मतम प्रोटॉन एवं इलेक्ट्रॉन को आवेक्षित करती है? वह कौन सी शक्ति है जो सूक्ष्मतम इलेक्ट्रॉन से लेकर विशाल ब्रह्मांड के खरबों खरब आकाशीय पिंडों को गतिमान बनाए रखती है? अनुवांशिक गुण जीन में पाए जाते हैं पर यह गुण इतने सूक्ष्म रूप में कौन भरता है? इन सबके पीछे एक परम शक्ति है जिसे दुनिया के विभिन्न भागों के लोगों ने ईश्वर, अल्लाह, खुदा, गॉड, भगवान या प्रकृति माना। नाम अलग होने के बावजूद भाव परम शक्ति का ही रहा। इतनी विभिन्नता के बावजूद यह सोच एक कैसे हुई?

कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी प्रार्थना में कहा है, ''है ईश्वर मैं नहीं कहता की मेरे कष्ट दूर कर। मैं तो यह प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं उन कष्टों का सामना कर सकूं।'' यही सच्चा ईश्वरवाद है।

जीवों में ऐसी कौन सी शक्ति है जिसके निकल जाते ही शरीर निष्प्राण व निश्चेतन हो जाता है? दुनिया के अलग-अलग भागों में आत्मा, रूह या सोल नाम से जाना जाने वाला यह चेतन कहाँ से आता है और कहाँ जाता है? इसका जबाव हमारे पास नहीं है। ऋषियों ने इसे विराट चैतन्य का अंश बताया है। यह विराट चैतन्य ही ईश्वर है। वैज्ञानिकों ने अपने अथक प्रयासों से ज्ञान पर पड़े कई परदों को हटाया है, इससे धर्म में फैले अंधविश्वास को हटाने में मदद भी मिली है। साथ ही प्रकृति के कुछ रहस्यों के उजागर होने से ईश्वर की असीम शक्तियों के एक अंश को जानने में सफलता हासिल हुई है।

शास्त्रों में वर्णित है कि यह सृष्टि ईश्वरीय माया का एक स्वरूप है। वैज्ञानिक खोजों ने माया के एक अंश को समझाने में मदद की है। वैज्ञानिक किसी भी शक्तिशाली दूरबीन से जब भी कोई दूरस्थ आकाशगंगा देखते हैं एवं बताते हैं कि वह आकाशगंगा हमसे 500 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर है तो इसका मतलब यह है कि आज हम तक जो प्रकाश उस आकाशगंगा से आ रहा है वह 500 करोड़ वर्ष पहले चला था यानि वह दृश्य भी इतना ही पुराना है। इस दरमियान वह निहारिका विपरीत दिशा में चली गई या अन्य निहारिका से टकराकर दो निहारिकाएँ मिलकर एक नई निहारिका बन गई (उदाहरण के लिए कार्ट व्हील गैलेक्सी का निर्माण इसी तरह हुआ) या किसी कृष्ण विवर (ब्लैक होल) के असीम आकर्षण से उसमें समाकर लुप्त हो गई तब भी वह हमें दिख रही है क्योंकि उसके अस्तित्व में होने के समय का प्रकाश हम तक अब पहुंच रहा है। इसी तरह नवनिर्मित निहारिका जो हमसे सैकड़ों करोड़ प्रकाश वर्ष दूर है उसका प्रकाश हम तक अभी नहीं पहुंच पाया है अतः वह होते हुए भी हमें नहीं दिख रही है। यानी जो है वह नहीं दिख रहा है जो नहीं है वह दिख रहा है यह ईश्वरीय माया का एक रूप है।

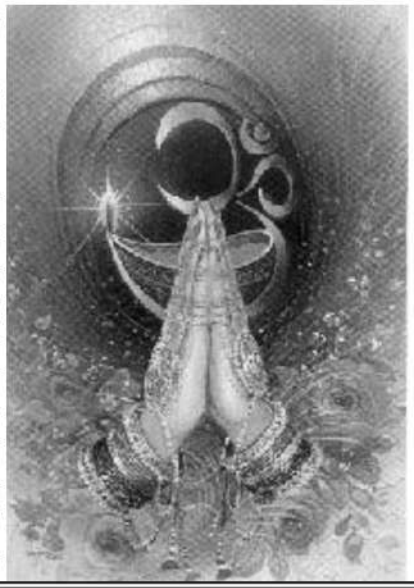

यह सही है कि दुनिया में कुछ लोग निजी तौर पर अनिश्वरवादी है तो कुछ जिस धर्म, पंथ या संप्रदाय में पैदा हुए उसकी अनिश्वरवादी मान्यता के कारण उनकी सोच भी वैसी हो जाती है। भारत में भी कई पंथों-संप्रदायों में यह मान्यता है कि सृष्टि को बनाने वाला कोई नहीं है यह तो ऐसे ही चली आ रही है, भगवान-वगवान कुछ नहीं होता है लेकिन ऐसे संप्रदायों के लोग भी उन महापुरुषों की जिन्होंने यह बातें कही भगवान के रूप में पूजा करते हैं एवं धर्म, जप, साधना, तपस्या तथा सदाचारों को आत्मकल्याण का कारण बताते हैं, क्यों? कल्याण कब होगा? यदि आपकी साधना, तपस्या, सदाचार का कोई हिसाब रखता होगा तब ही तो कल्याण होगा लेकिन ऐसे लोग भ्रमित किए हुए हैं जो प्रकारान्तार से ईश्वर को तो मानते हैं लेकिन उसके होने का विरोध भी करते हैं। भगवान उनका भला करे।

मनुष्य ने जो भी खोजें की, सिद्धांत प्रतिपादित किए वह सृष्टि में पहले से मौजूद थे। पृथ्वी पर गिरते सेवफल को देखकर मनुष्य ने गुरुत्व बल की खोज की उसके पहले भी गुरुत्व बल अपना कार्य कर रहा था। आगे भी करता रहेगा क्योंकि उसका नियंता सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी ईश्वर है। हम कारण तो जानते हैं पर कारणों के कारक को नहीं जानते। हाँ धर्म में जो अंधविश्वास आए हैं, किसी भी तात्विक चिंतक ने उनका समर्थन नहीं किया। सभी ने ईश्वर में विश्वास रखते हुए कार्य करने की प्रेरणा दी चाहे वह गीता हो, अरविंद, विवेकानंद, चिन्मयानंद या महात्मा गाँधी हो। पत्थर उछालकर उसके नीचे सिर करने व भाग्य भरोसे रहने को भक्ति की शक्ति के पुरौधा पांडुरंग शास्त्री आठवाले ने भ्रांत ईश्वरवाद कहा है। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी प्रार्थना में कहा है, ''हे ईश्वर, मैं नहीं कहता की मेरे कष्ट दूर कर। मैं तो यह प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं उन कष्टों का सामना कर सकूं।'' यही सच्चा ईश्वरवाद है। मनुष्य द्वारा मान्यता दिए जाने या नहीं दिए जाने पर भी ईश्वर की सत्ता पर, उसकी सर्वशक्तिमानता पर, सर्वव्यापकता पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। ईश्वर मनुष्य की मान्यता का मोहताज नहीं है।

व्यक्तित्व

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।...

न्यायजगत के दैदीप्यमान नक्षत्र

जितेंद्र माहेश्वरी

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।...

म.प्र. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जितेंद्र माहेश्वरी का जीवन मानस की इन्ही पंक्तियों का सारांश लगता है। अपनी प्रतिभा, कार्य कुशलता और विद्वता के माध्यम से आपने न्यायजगत में ऐसा मुकाम बनाया है, जहां श्रद्धा खुद नतमस्तक हो जाती है। अपने कर्म की पवित्रता को बनाए रखते हुए समाज के प्रति उत्तरदायित्व को आपने बखूबी निभाया। सरल, सहज, मृदुभाषी श्री माहेश्वरी न्याय के प्रति सदैव ईमानदार रहे हैं। आपकी प्रतिभा और विद्वता से समाज हमेशा लाभान्वित हुआ है।

■ अशोक धीरन, विदिशा

जोहरा जिला मुरैना में जन्में श्री जितेंद्र माहेश्वरी की प्राथमिक से हायर सेकेंडरी तक की शिक्षा जोहरा में हुई। बी.ए., एल.एल.बी. कर 24 वर्ष की उम्र में सन् 1985 से सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रमेशचंद्र लाहोटी के सान्निध्य में वकालत प्रारंभ की। अपनी मेहनत, लगन एवं ईमानदारी का परिचय देते हुए हमेशा आगे बढ़ने की कोशिश की जिसमें आप हमेशा सफल रहे। आपने श्री के.के.लाहोटी के सान्निध्य में भी करीब दो वर्ष कार्य किया। एल.एल.एम. की डिग्री (सन् 1982 में) प्राप्त कर अपनी मंजिल की ओर बढ़ने के लिए दृढ़निश्चय का परिचय दिया। होनहार काबिल एडवोकेट के रूप में प्रदेश भर में वकीलों के आदर्श बन गए। सन् 1989 में स्वयं की प्रेक्टिस चालू कर याचिका, सिविल व टैक्सेशन के मामलों में म.प्र. में काफी ऊँचाइयों को छुआ। आपके पास आज भी 800 केस (हाईकोर्ट) की बुकिंग है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी - सन् 1998-99 में आप उच्च न्यायालय ग्वालियर के सेक्रेटरी पद पर रहे एवं सन् 2003 में म.प्र.राज्य अधिवक्ता परिसर के मैंबर चुने गए। आपके पिता स्व. श्री सूरजमलजी माहेश्वरी जोहरा में दस्तावेज लेखक थे और कानून के बड़े ज्ञाता थे। फैसले के समय उनका मार्गदर्शन लिया जाता था। श्री माहेश्वरी अपने चार भाइयों में सबसे छोटे हैं। आपके बड़े भाई श्री कौशल माहेश्वरी जोहरा में एडवोकेट हैं एवं नगर पालिका अध्यक्ष भी रह चुके हैं। दूसरे भाई भी मुरैना में एडवोकेट हैं एवं तीसरे भाई डॉ. रवि माहेश्वरी जोहरा में शासकीय चिकित्सक हैं। इस तरह आपका परिवार न्यायक्षेत्र से सदैव जुड़ा रहा है। आपके पूर्वज डीडवाना अजीतगढ़ सीकर के थे। आप हमेशा समाज के शुभचिंतक रहे हैं। आप टेबल टेनिस के अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। आपका विवाह कासगंज यू.पी.में हुआ। आपके दो बच्चे 9 वर्ष का बेटा एवं 7 वर्ष की बेटी जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आपने हमेशा गरीबों की आगे आकर मदद की। हमेशा रोते हुए इंसान के आँसू पोंछने का कार्य किया। आपकी विशेषता है कि न्याय के प्रति हमेशा ईमानदार रहे हैं। सिविल केसों में आपकी धाक मानी जाती है।

समाज की नज़र में श्री माहेश्वरी - श्री वृहत्तर माहेश्वरी समाज ग्वालियर के अध्यक्ष श्री निर्मल माहेश्वरी एवं सचिव श्री सुनील लोईवाल के अनुसार श्री जितेन्द्र माहेश्वरी समाज के गौरव हैं। उन्होंने छोटी सी उम्र में उच्च न्यायालय ग्वालियर के मुख्य न्यायाधीश का पद प्राप्त कर समाज को गौरवान्वित किया है। श्री लाहोटीजी के बाद श्री जितेन्द्र माहेश्वरी ने ग्वालियर का नाम ऊंचा किया है। श्री माहेश्वरी अत्यन्त ही सरल एवं समाज के प्रति हमेशा सक्रिय और तन-मन-धन से समाज की गतिविधियों मे भाग लेते रहे हैं। आपके परिवार का भी हमेशा से सक्रिय योगदान रहा है। आपके भतीजे श्री आशुतोष माहेश्वरी, माहेश्वरी युवा संगठन ग्वालियर के अध्यक्ष एवं वृहत्तर ग्वालियर समाज के महासचिव रह चुके हैं। आपकी धर्मपत्नी भी माहेश्वरी महिला मंडल ग्वालियर की कर्मठ पदाधिकारी है। श्री जितेन्द्र माहेश्वरी जी से ग्वालियर माहेश्वरी समाज को बहुत अपेक्षा है एवं विश्वास है कि एक दिन भारत के न्यायपालिका क्षेत्र में गौरवान्वित करेंगें।

ईमानदारी और सही रास्ता

आपने समाज की युवा पीढ़ी के लिए अपने संदेश में कहा है कि किसी भी विषम परिस्थिति में परिवार और समाज को नहीं भूलना चाहिए। कठिन परिश्रम, ईमानदारी और लगन से अपनी जीविका की ओर ध्यान देना चाहिए। ऊँचाइयों पर पहुंचने के लिए गलत रास्तों का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिए। आपके प्रिय मित्र श्री गोविंद माहेश्वरी कहते हैं- आप नेक इंसान हैं। दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझते हैं। आप कम शब्दों में सारी बात कह जाते हैं। सज्जनता ही आपका परिचय है।

लाल रंग
ऊर्जा का भंडार

विशेषज्ञ हावड़ कीच का कहना है कि उपयुक्त रंग हमें तन-मन से स्वस्थ और ऊर्जावान बनाते हैं जबकि अनुपयुक्त रंगों का संप्रेषण दिमाग को असंतुलित कर देता है तथा व्यक्ति असफल और अस्वस्थ हो जाता है। आइये आपको बताएं लाल रंग हमारे जीवन को किस तरह प्रभावित करता है।

■ किशन माहेश्वरी, राँची

शत्रु यदि आपको भयभीत कर रहा हो या कोई गुप्त भय आपको सता रहा हो और आप हताशा के चक्रव्यूह में जा फँसे हैं, तो आप तत्क्षण लाल वस्त्र धारण कर लीजिए, लाल रंग के पुष्प मंगा लीजिए, लाल रंग की कलम रख लीजिए, लाल रंग का मूठवाला चाकू रख लीजिए और माँ दुर्गा या भगवान बजरंगबली की ऐसी तस्वीर या मूर्ति के समक्ष पूजा-अर्चना कीजिए जो पूर्णतया लाल रंग में रंगी हो, माथे पर रोली या लाल अबीर-गुलाल का टीका लगा लें। यदि आप इतना कुछ कर लेते हैं तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी हताशा-निराशा काफूर हो जाएगी, शत्रु या गुप्त दुश्मन शिथिल पड़ जाएंगे, आप में ऊर्जा का संचार होने लगेगा, आप आशावान हो जाएंगे, आप में अदृश्य शक्ति और आत्मविश्वास का संचार होने लगेगा, बाजुओं में ताकत का अनुभव होगा और आप अज्ञात भय से उबरकर कुछ नया कर गुजरने हेतु उतावले हो जाएंगे।

बच्चों को लाल रंग के परिधान पहना दीजिए, फिर देखिए बच्चे कितने गतिशील हो जाते हैं। नववधू को लाल परिधान में घर लाना शुभ माना जाता है। नववधू लाल वस्त्रों में अति आकर्षक भी लगती है। जब सूर्योदय होता है तो लालिमा फैल जाती है। इस लालिमा के आते ही प्रकृति के जीव-जन्तु एवं वनस्पति सक्रिय हो जाते हैं। पशु-पक्षियों में नवचेतना का संचार होने लगता है। यहाँ तक कि अंधकार को पंसद करने वाली बुरी जीवात्माएँ भी लालिमा देख छिपने का प्रयास करती हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि सूर्य की रश्मियों में लाल रंग सन्निहित हैं। इस तरह के कई प्रसंग हैं जिससे ज्ञात होता है कि लाल रंग से मानव का तन-मन प्रभावित होता है किंतु लाल रंग को सीमित अनुपात में ही ग्रहण करना शुभ और सटीक है। कभी-कभी कहीं-कहीं लाल रंग का अत्यधिक प्रेषण मन और तन को हानि भी प्रदान करता है। अत एव रंग का चयन और ग्रहण संतुलित अनुपात में सीमित समय तक ही अच्छा साबित हो सकता है, अन्यथा शारीरिक-मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

रंग का उपयोग बिना सोचे-विचारे नहीं करना चाहिए। अनुभव की कमी और थोड़ी-सी भूल रंग संप्रेषण में अविश्वसनीय हानि दे सकती है। अतः रंग के विषय में गूढ़रूप से अध्ययन-मनन अनिवार्य है। ऐसे विद्यार्थी को यदा-कदा लाल रंग की स्याही में लेखन कार्य करना चाहिए जिसमें अध्ययन-मनन में कोताही बरतने की प्रवृत्ति रहती हो। रंग का शरीर में संप्रेषण रत्न के द्वारा भी होता है। अतः ज्योतिषी जातक की जन्मकुंडली, हस्त परीक्षण एवं अंक विद्या आदि के द्वारा जाँच कर संबंधित रत्न पहनने को कहता है। ज्योतिषियों ने माना है कि लाल रंग मंगल ग्रह का प्रिय रंग है। मंगल के प्रतिकूल प्रभाव को दूर करने के लिए लाल रंग का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। हस्तरेखाविद् भी उसी हथेली को अधिक कारगर मानता है जो लालिमायुक्त होती है। वास्तुशास्त्र में रंग की विस्तृत मीमांसा है। वास्तुशास्त्री घर, कारखाना, कार्यालय एवं मनोरंजन स्थल आदि को अनुकूल फल प्रदान करने हेतु सटीक रंग लगाने को प्रेरित करता है।

वास्तुशास्त्री भी रंग के उपयोग के मर्म को समझाता है। रंग का सही चुनाव व्यक्ति को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर कष्टों का निवारण करते हुए सफलता अर्जित कराता है। सम्राट अकबर के बारे में कहा जाता है कि वह सप्ताह के सातों दिनों में ग्रहों के पसंदीदा रंग के परिधानों को पहनता था। जल चिकित्सा पद्धति में भिन्न-भिन्न रंगों की बोतलों में निश्चित अवधि तक जल रखकर उपयोग में लाया जाता है जिसके फलस्वरूप रोगों का शमन होता है।

लाल रंग का झंडा हिलाकर ट्रेन रोक दी जाती है, लाल रंग का कपड़ा हिलाकर खतरे का आभास करा दिया जाता है, लाल रंग का सिंदूर धारण कर और लाल रंग की चूड़ियाँ पहनकर नारी का संकेत होता है कि वह अपने पिया की हो गई अतः बुरी नजर न रखी जाए और यह लाल रंग का ही कमाल होता है कि जब उसके पिया में जोशो खरोश बढ़ जाता है, तब पति के स्नेहिल स्पर्श से पत्नी के चेहरे पर लालिमा आ जाती है और क्रोध करने पर नर-नारी दोनों की आँखें लाल हो जाती हैं।

किसी विद्यार्थी को परीक्षा में अनुत्तीर्ण करना हो तो पेन की लाल स्याही निर्णय देने आ जाती है। किसी को नौकरी से मुअत्तल करना हो तो आदेश लाल रंग की स्याही में उतरकर आ जाता है। किसी की गलती सुधारनी हो तो लाल स्याही सूचक बनती है। लाल रंग युद्ध की विभीषिका को भी दर्शाता है। युद्ध के पूर्व देवी-देवताओं के समक्ष पशु बलि देकर लाल रक्त से रंजित तलवार को लेकर योद्धा युद्ध स्थल पर जाते थे। अंततोगत्वा सभी परिप्रेक्ष्यों में देखने के बाद यही कहा जा सकता है कि रंगों के आवरण में ही यह समस्त प्रकृति चराचर है अतः रंगों का अध्ययन-मनन कर हमें निष्कर्ष निकालना चाहिए कि समय-समय पर कौन-कौन सा रंग किस-किस अनुपात में उपयोग में लेना चाहिए। देश-विदेश में आज भी रंग परिपाटी पर शोध-अनुसंधान चल रहे हैं। जबकि हमारे ऋषि-महर्षियों ने हजारों वर्ष पहले ही इनकी सटीकता और उपयोगिता का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है किंतु वर्तमान वैज्ञानिक अपने ही ढंग से इसके सत्यापन और शोध में लगे हैं। सुप्रसिद्ध रंग शोधकर्ता एवं विशेषज्ञ एंथोनी एल्डर का कथन है कि मनुष्य का बहिर्मुखी जीवन लालिमा प्रधान होता है। स्वभावगत तथा समयानुकूल विशेषताओं का घटाने-बढ़ाने के लिए उन रंगों का उपयोग या त्याग करना चाहिए जिनमें अभीष्ट विशेषताओं का समावेश है। ✪

इस बात से शायद ही कोई अनभिज्ञ होगा कि सांड यदि लाल रंग का वस्त्र या वस्तु देख ले या कोई उसकी आँखों के सामने लाल रंग लहरा दे, बस फिर क्या है सांड अपना आपा खो देता है तथा उसे मटियामेट कर देने हेतु कमर कस लेता है। यह जीव ऐसा इसलिए करता है क्योंकि प्रकृति ने जन्म से ही इसे गर्म मिजाजी बना रखा है। ऐसे में इस ऊर्जावान प्राणी को भला लाल रंग से ऊर्जा की क्या आवश्यकता? ऐसी ही आक्रामक या हानिकारक स्थिति उस मनुष्य की भी हो सकती है जिसमें पहले से ऊर्जा अर्थात गर्म मिजाजी हो और हम उसे और अधिक लाल रंग से ओत-प्रोत करने की गलती कर बैठें। लाल रंग के शीशे का चश्मा पहनकर अधिक देर तक वाहन नहीं चलाना चाहिए वरना दुर्घटना की संभावना बढ़ सकती है।

जीवन की उलझनें मिटाने वाली एक पुस्तक

(श्री हनुमान चालीसा की चौपाइयों की व्याख्या)

जीवन प्रबंधन

- हम कामयाब हैं फिर भी परेशान हैं?
- धन दौलत मिलने पर भी शांति क्यों नहीं मिलती?
- जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रबंधन होना आवश्यक है।
- अध्यात्म से जुड़कर भी व्यवहारिक जीवन में सफल कैसे रहें।

इन बातों के अनेक सूत्र हैं पं. विजयशंकर मेहता द्वारा लिखित तथा राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक *''जीवन प्रबंधन''* में। ''एक बार अवश्य पढ़ें - महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लगेंगे।''

पुस्तक मूल्य
150/- रु.
(डाक व्यय अतिरिक्त)

प्राप्त करने का स्थान -
ऋषिमुनि प्रकाशन,
माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2551307 मो. 094250-91161

व्यंग्य

कभी-कभी इन दिग्गज वक्ताओं से बड़ी तकनीकी गलतियाँ हो जाती हैं, मेरे शहर के व्यस्त वक्ता एक बार एक जलसे में अपनी पुरकशिश आवाज और छा जाने वाले अंदाज में चालू हो गए। मुल्लाजी कितने उदार, विद्वान, समाजसेवी हैं, संयोजक हड़बड़ाया, जाकर कान में फुसफुसाया श्रीमान ये आपने कौन सी कैसेट लगा दी। ये तो श्री राजेंद्रसूरीश्वर जी महाराज का जन्मोत्सव है, बोहरों के मुल्लाजी के जन्म दिवस जलसा-ए-मुबारक में तो शाम को जाना है। चतुर वक्ता तत्काल सभी धर्माचार्यों के एक जैसा होने का झाँसा देकर तत्काल मुद्दे की बात पर आ गए।

■ डॉ. नारायण तिवारी, उज्जैन

तक़रीर हाज़िर है..

शब्दों के बारे में सर्वाधिक शोध हिंदुस्तान में ही हुआ है और शब्दों का सर्वाधिक दुरुपयोग भी। भाई लोग खोजते-खोजते इस नतीजे पर पहुंच गए कि शब्द ही ब्रह्म है और व्यवहार में अच्छे-अच्छे शब्दों को भेरू बनाकर छोड़ दिया। मौन की महिमा गाने वाले इस देश में सबसे ज्यादा बकवास होती है। आजादी के बाद जिस आचरण पर राजा-प्रजा दोनों ने सबसे ज्यादा अमल किया है वो है- भाषण। गम का या खुशी का, हँसी का या संजीदगी का कैसा भी मौका हो लीजिए तक़रीर हाज़िर है। चूंकि हद से ज्यादा भाषण दिए जाने का रिवाज हो गया है अतः माँग और पूर्ति के परंपरागत नियम के अनुसार जिस चाहे मौके पर जैसा चाहे भाषण देने वाले प्रखर-मुखर वक्ता गली-मोहल्लों में गाजर घास की तरह उग आए हैं। सुने या न सुने, गुने या न गुने उपदेश हाजिर हैं। अल्ल सुबह आप अपना दरवाजा खोलिए पूरी संभावना है कि कोई हष्ट-पुष्ट मुस्टंडा अल्लाह के नाम पर एक मुट्ठी आटे के लिए आपको संसार की निस्सारता पर एक संक्षिप्त भाषण दे जाए। अब आप ही सोचिए ऐसी उपदेशक शक्ल देखकर जो दिन शुरू होगा वो कैसा गुजरेगा। फिर इनसे किसी भी मौके या स्थान पर निजात पाना मुश्किल है। आपके घर किसी का जन्म हो तो ये बच्चे की ऐसी संभावनाएं और उज्जवल भविष्य का वर्णन करेंगे कि आपको लगेगा कि आपके घर साक्षात् श्रवण कुमार जन्में हैं। इनके कंधे मजबूत होने की देर है और आप कलयुग में भी काँवर में बैठकर दुनिया देखने के लिए तैयार रहिए। आपको जैसे-तैसे जुगाड़-तुगाड़ करके कुछ ले देकर प्रमोशन मिला। ये आपको भाषण में परिश्रमी, नियमित, निष्ठावान जाने क्या-क्या बता रहे हैं। सुनकर आपको खुद को लगे कि ये किसके बारे में बात कर रहे हैं। आप जी.पी.एफ से सारी धनराशि निकालकर, पुराना पुश्तैनी मकान बेचकर बिटिया की शादी कर रहे हैं, उधर **सुरतिय नरतिय नागतिय सब चाहत यह होय** की तर्ज पर तक़रीर जारी है। वर पक्ष के कारण आपको घर मकान बेचने पड़े हैं। उन्हें दशरथ की तरह उदार और सदाशयी बताया जा रहा है। इधर आप क्रोध से विदेह हुए जा रहे हैं। इनके मुँह से शहर के दस वर्ष में शिक्षक से सूखे मेवे और ट्रांसपोर्ट के थोक बिजनेसमेन से लेकर पूर्व विधायक को त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति और शहर के कवि सम्मेलनों को अर्ध मुजरों में बदल देने वाले स्थानीय कवियों को सुभद्रा कुमारी और महादेवी के समकक्ष सुनना रोज़मर्रा की बात है। आप ये सब सुनकर तिलमिलाते रहिए, वे खुश हैं। तक़रीर जारी है। वक्ताओं का संवेदन इतना बोथरा है कि वे जलते हुए मुर्दे की ऐन छाती पर खड़े होकर शोक सभा में प्रतीकों और लाक्षणिक प्रयोगों से लदा घंटों लंबा भाषण दे सकते हैं। अगला मनों लकड़ी सहित राख हो जाता है। इनकी तक़रीर जारी है। समय आ गया है कि सभी अवसरों पर भाषण के आम रिवाज को मद्देनजर रखकर शहर के सर्वसुविधा संपन्न टेंट हाउसों में, जिनमें कनात, गद्दे-तकिए, बर्तन, बैंड, घोड़ा, रसोइया, छालेदारी सब एक छत के नीचे उपलब्ध होने लगा है। उत्सव के आवश्यक अंग इन पेशेवर वक्ताओं की भी एडवांस बुकिंग होने लगे। कैसा अच्छा लगे जब टेंट हाउस वाला गिनवाए- ''साहब बैंड, घोड़े, बत्ती वाला, बारात में नाचने वालों के अतिरिक्त हमारे यहाँ शहर के मशहूर वक्ता श्री श्री... की सेवाएं भी उपलब्ध हैं एक घंटे में।

विवाह
समझ और धैर्य का संतुलन

■पं. विजयशंकर मेहता, उज्जैन

विवाह, यूं तो संस्कार है लेकिन इस बदलते दौर में इसे आयोजन माना जाता है और उससे भी अधिक, प्रगतिशील लोगों ने इसे घटना मानना शुरू कर दिया है। विवाह चाहे संस्कार, आयोजन या घटना है लेकिन इसके परिणाम निजी, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय होते ही हैं। अलग-अलग स्त्री-पुरुषों में परिणाम के क्षेत्र अलग-अलग हो जाते हैं। किसी के लिए इन चारों क्षेत्रों में समान परिणाम है तो किसी के लिए पारिवारिक रूप से अधिक, निजी रूप से कम या किसी के लिए निजी रूप से अधिक, सामाजिक रूप से कम और राष्ट्रीय रूप से विवाह के परिणाम गौण होते हैं। यह पति-पत्नी के ऊपर है कि वे इसके परिणाम को किस रूप में लेंगे लेकिन जीवन प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है वैवाहिक जीवन।

गृहस्थी तपोवन से कम नहीं। यदि आदमी साधना की दृष्टि से देखे वरना गृहस्थी उपद्रव के केंद्र, अशांति के ठिकाने, मनमानी के मुकाम और पछतावे के निर्णय के अलावा कुछ भी नहीं। पूरब और पश्चिम संस्कृति में यह बड़ा फर्क है कि पूरब में विवाह को एक दायित्व माना जाता है और पश्चिम में मात्र एक जीवन शैली। उनके लिए यह आयोजन है और हमारे लिए संस्कार। वे इसे घटना मानते हैं और हम जीवन भर का संकल्प।

विवाह में दो परिवार, दो व्यक्ति, दो आत्मा ही नहीं मिलती। विवाह में सबसे महत्वपूर्ण होता है दो व्यक्तित्व का मिलन और इसका मतलब है दो महत्वाकांक्षा, दो अहंकार, दो समाज, दो सिद्धांत, दो जीवनशैली, दो निर्णय मिलते हैं और यदि इनका आधार धैर्य तथा समझ न हो तो इन दोनों का मिलन विकृत, भयंकर, पीड़ादायक, अशांतिकारक और निराशा को जन्म देने वाला साबित होता है। विवाह का मामला केवल स्त्री-पुरुष द्वारा एक-दूसरे की पूर्ति करने का नहीं है। कहते हैं अच्छी स्त्री से शादी होना मतलब जीवन के तूफान में बंदरगाह का आ जाना और बुरी स्त्री से शादी होने का मतबल बंदरगाह में ही तूफान आ जाना।

रामकथा में एक जगह प्रसंग आता है। सती के देह त्याग के बाद शिवजी को वैराग्य हो गया और वे ध्यान में चले गए। तब श्रीराम ने उनके पास जाकर विवाह करने का निवेदन किया-

अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो मपर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मांगें देहु॥

हे शिवजी यदि आपका मुझ पर स्नेह है तो अब आप मेरी विनती सुनिए। मुझे यह मांगें दीजिए कि आप जाकर पार्वतीजी से विवाह कर लीजिए।

शिवजी ने पार्वतीजी से विवाह किया और कार्तिकेय तथा गणेशजी का जन्म हुआ। विवाह का आग्रह इसलिए किया गया था कि देवताओं को तारकासुर नामक राक्षस ने बहुत परेशान कर रखा था और उसकी मृत्यु पार्वती-शिव की संतान के हाथों ही होना तय थी। इसलिए देवताओं का आग्रह था। इस घटना के पीछे जो सबसे बड़ा संदेश है वह यह है कि विवाह केवल स्त्री-पुरुष का मिलन नही है। उनके परिणामों से समूचा परिवार, समाज, राष्ट्र, संसार प्रभावित होता है। अतः अपने-अपने स्तर पर विवाह के उद्देश्यों और परिणामों के प्रति जागरूक रहना जीवन प्रबंधन है।

नीति शास्त्र में श्लोक है-

स बन्धुर्यो हितैषी स्यात् स पिता यस्तु पोषकः।
स सखा यत्र विश्वासः सा भार्या यत्र निर्वृतिः॥

वही बंधु है जो हितैषी हो, वही पिता है जो पोषक हो, वही मित्र है जिस पर विश्वास किया जा सके और वही पत्नी है जिससे चिंता समाप्त हो।

पत्नी तब ही पति को चिंता मुक्त कर सकेगी, जब पति अपने दायित्वों के प्रति चैतन्य होगा।

विवाह का महत्वपूर्ण पहलू है दायित्व बोध। विवाह केवल एक निर्वहन नहीं है, जिसे अपने वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारी का अहसास हो जाता है, वह फिर अपनी गृहस्थी का प्रबंधन श्रेष्ठ तरीके से कर लेता है। चूंकि गृहस्थी जैसी संस्था के परिणाम निजी, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय होते हैं। अतः पति-पत्नी को स्वयं सावधान रहकर एक ऐसी संतान को जन्म देना चाहिए जो इन चारों परिणामों के लिए हितकारी हो। आज के युग में यह बिल्कुल सही है कि आयोजन के रूप में विवाह मान्य है। हितोपदेश में व्यक्त है कि-

क्रतो विवाहे व्यसने रिपुक्षये यशस्करे कर्मणि मित्रसङ्ग हें।
प्रियासु नारीष्वधनेषु, वान्धवेष्वव्ययो नास्ति नराधिपाष्टसु॥

राजन्! आठ कार्यों में अति व्यय हानिकर नहीं है। यज्ञ, विवाह, व्यसन (संकट) शत्रु-विनाश, यशस्वकारी कर्म, मित्र संग्रह, नारी प्रेम, निर्धन बंधुवर्ग।

विवाह में अतिव्यय हानिकारक नहीं है। इसका अर्थ है यह है कि इसे जीवन में सबसे महंगी घटना माना है। यह इसलिए मूल्यवान है कि मानव जाति के मूल्य और सिद्धांत इससे प्रभावित और संचालित होते हैं। इसलिए स्त्री-पुरुष को विवाह के प्रति सात्विक भाव रखते हुए प्रभावशाली सोच के साथ आपसी समझ के स्तर पर स्वीकार करना चाहिए। यदि ऐसा होता है तभी स्त्रियाँ संस्कारों की रक्षा कर सकेंगी और पुरुष उसका पालन कर सकेंगे। ✪

व्यंग्य सत्संग

स्वर्ण-सूत्र

क्रोध शमन

मैं परम शांत हूँ। मुझमें लेशमात्र क्रोध नहीं है। जो लोग मुझसे ईर्ष्या रखते हैं, मेरी बुराई करते हैं उन सभी को मैं हृदय से क्षमा करता हूँ। क्षमा ही मेरा स्वरूप है। मैं दूसरों के दोषों को क्षमा करता हूँ तथा अपने और दूसरों के अपराधों के लिए परम पिता परमात्मा से क्षमा माँगता हूँ।

यदि मेरी कोई हानि करता है तो उस हानि का बदला लेने का सामर्थ्य रखते हुए भी उसका बदला न लेकर उसको क्षमा करता हूँ। यदि मुझसे किसी की हानि हो अथवा किसी को दुःख पहुंचे तो उसके लिए क्षमा माँगता हूँ। मैं क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, बुराई, छल, कपट, निन्दा आदि का बदला क्षमा से लेता हूँ। क्षमा से ही मैं सर्वत्र विजय प्राप्त करता हूं। क्षमा ही मेरी शान्ति है। जो लोग मेरी झूठी निन्दा करते हैं, झूठे दोष मुझ पर लगाते हैं उनको मैं अज्ञानी समझकर क्षमा करता हूँ। यदि कोई मेरी सच्ची निन्दा करता है और मेरे दोष प्रकट करता है उसके लिए मैं उसको कोटिशः धन्यवाद देता हूँ तथा अपने कृत्य के लिए परम पिता परमात्मा से सच्चे हृदय से क्षमा मांगता हूँ। मैं रोग, द्वेष आदि भावनाओं को त्यागकर क्षमा रूप हो गया हूँ। क्षमा को मैंने अपने जीवन का सबसे मुख्य अंग मान लिया है।

(उपरोक्त वाक्यों को रात को सोते समय, प्रातः उठकर तथा दिन में कई बार दोहराने पर कुछ ही दिनों में क्रोध की भावना समाप्त होकर मन शांति से भर जावेगा) ✪

BOBBY
AACHAR & FOODS
सभी प्रकार के अचार,
पापड़, जीरावन के निर्माता
27, कालिदास मार्ग, फ्रीगंज,
मक्सी रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-(दु.) 2526173
(नि.) 2521075 मो. 94251-95804

प्रभु सत्ता का चमत्कार

सूली पर खिले फूल

■ डॉ. नारायण तिवारी, उज्जैन

चमत्कार का अपना एक विज्ञान है, उसकी अपनी एक नियमावली है जो प्रकृति या पदार्थ के सब प्रचलित नियमों का अतिक्रमण करती है और चमत्कार घटित हो जाता है। कोटिशः वैष्णवों के परम वरुणालय भगवान विट्ठल का श्री विग्रह पंढरपुर महाराष्ट्र के एक विशाल देवालय में विराजता है। बारकरी संप्रदाय के भक्तजन प्रत्येक आषाढ़ एवं कार्तिक की एकादशी को उनके दर्शनों के लिए यात्रा करते हैं। प्रसिद्ध विट्ठल भक्त श्री भानुदास भी नियम से बारकरी यात्रा करते थे। विट्ठलोपासना उनकी कुल परंपरा थी। आजीविका के लिए वे कपड़े का व्यापार भी करते थे पर चित्त तो सदैव ईंट पर खड़े, कमर पर हाथ रखे जगमोहन भगवान विट्ठल के चरणों में ही लगा रहता। सांसारिक दायित्वों के होते हुए भी उनकी आषाढ़, कार्तिक बारी कभी नहीं चूकी। वे अपने जीवनकाल में ही ख्यातिलब्ध विट्ठल भक्त माने जाते थे।

एक बार विजयनगर के महाबली और प्रतापी महाराज श्रीकृष्णदेवराय जी भी पंढरपुर श्री विट्ठल के दर्शनार्थ पधारे, भावुक महाराज कोटिशः वैष्णवों की भावनाओं का अतिक्रमण कर श्री विट्ठल के अनुपम विग्रह को भी अपने साथ विजयनगर ले गए। घटना के पश्चात पहली ही आषाढ़ी एकादशी पर जब बारकरी के अगणित भक्त पंढरपुर पधारे तो देवालय में श्री-विग्रह न पाकर उनके हृदय विदीर्ण हो गए।

समर्थ शासक से कोई कहे तो क्या सिवाय प्रार्थना के। भक्तों ने निश्चय किया कि जब तक श्री-विग्रह को निज देवालय में प्रतिष्ठित नहीं किया जाता, वे वहीं रहकर श्री हरि कीर्तन करते रहेंगे।

उन्हीं निष्ठावान भक्तों में श्री भानुदासजी भी थे। न जाने किस अज्ञात प्रेरणा से भानुदासजी ने घोषणा की कि वे विजयनगर जाकर श्री विट्ठल को वापिस ले आयेंगे। ऐसी घोषणा और दृढ़निश्चय करके भानुदासजी विजयनगर पधारे तब अर्द्धरात्रि थी। अपने निज भक्त को आया देखकर भगवान ने स्वयं अपने देवालय के सारे द्वार और द्वारपालों की मर्यादा तोड़कर भानुदास को न केवल दर्शन दिए, वरन् अपने गले से उतारकर एक रत्नजड़ित हार भी पहना दिया।

भक्त ने प्रार्थना की कि भगवान पंढरपुर पधारें। पर अभी तो लीला नटनागर भगवान को विजयनगर महाराज को अपने भक्तों की निश्छल निष्ठा का प्रमाण देना था। प्रातः रत्नहार सहित भानुदास पकड़ लिए गए और राज देवालय के चोरी में दंडस्वरूप उन्हें तत्कालीन विधान से सूली पर चढ़ाने की राजाज्ञा जारी की गयी।

भक्त ने दंड सहर्ष स्वीकार कर लिया, क्योंकि यदि प्राणनाथ ही प्राण लेने का प्रयोजन करें तो इसमें अपना क्या है। पर भक्तवत्सल भगवान सो तो नहीं रहे थे। वे तो लीला कर रहे थे। जिस सूली पर भानुदास को चढ़ाया जाना था अचानक उस सूखे काठ पर कोपलें फूट गईं, फूल खिल गए। दंडाधिकारी ने दौड़कर समाचार श्रीकृष्ण राय को दिया। चमत्कार घटित होते ही राजा को भक्त भानुदास की निष्ठा पर विश्वास हो गया। फिर भी अत्यंत विनम्रता से भानुदास ने विनय की कि महाराज कोटिशः वैष्णवों के साक्षात् प्राण श्री विट्ठल का श्री-विग्रह लौटा दें। बस और कुछ नहीं।

राजकीय सम्मान के साथ पालकी और सैनिकों सहित भगवान का श्री-विग्रह पुनः पंढरपुर पहुंचा दिया गया और फिर कार्तिक की एकादशी का विराट महोत्सव आयोजित हुआ। आज भी विजयनगर से पंढरपुर लौटने की इस चमत्कारपूर्ण घटना के स्मरण में कार्तिक एकादशी को भगवान विट्ठल की सवारी निकलती है।

इन्हीं भानुदास के कुल में आगे जाकर लोकप्रसिद्ध भक्त एकनाथ का जन्म हुआ। जिस भक्त की निष्ठा ने सूली पर फूल खिलाए हों, उनके वंश में एकनाथ जैसे भक्तों का जन्म अवश्यंभावी है, चमत्कार नहीं। कृपा उस समर्थ सत्ता की जिसे हम प्रेम से भगवान कहते हैं। ✪

आधुनिक जगत् और खास तौर पर नयी पीढ़ी चमत्कार पर विश्वास नहीं करती क्योंकि उनमें सीधा कार्य-कारण संबंध नहीं होता। विज्ञान और तकनीक के इस युग में मन सहसा चमत्कार को स्वीकृत करने को सहमत नहीं होता। उसे तो हर घटना या चमत्कार का प्रमाण पत्र चाहिए जबकि इस बारे में हम भूल जाते है कि चमत्कार खुद एक प्रमाण है कि मनुष्य और जगत की सत्ता के ऊपर भी एक सर्व समर्थ सत्ता है जो कर्तुमऽकर्तुम अन्यथा कर्तुम समर्थ है।

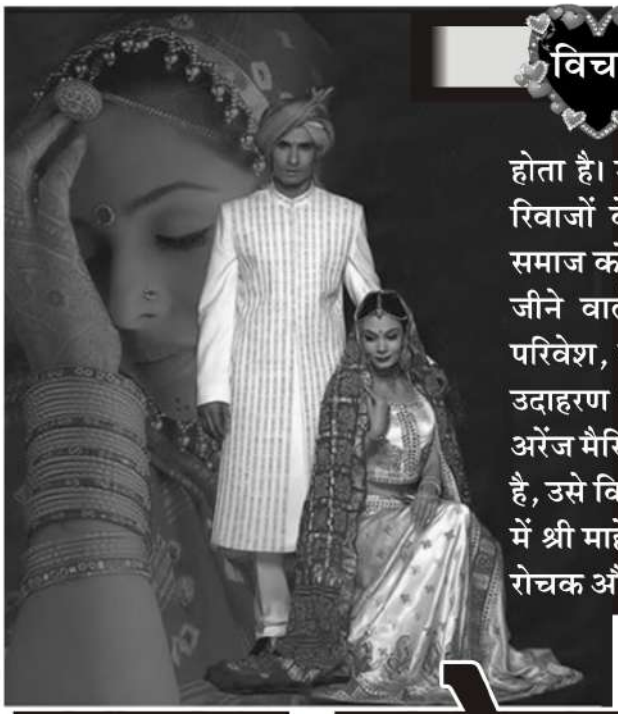

विचार

विवाह संस्कार मानव जीवन की विशेष सीढ़ी होता है। माहेश्वरी समाज में विवाह बहुत परंपरागत रीति-रिवाजों के आधार पर किया जाता है। बदलते समय ने समाज को भी एक नई दिशा दी है। पूरी तरह से परंपराओं में जीने वाले माहेश्वरी समाज में कितनी आसानी से नए परिवेश, सोच और बदलाव को अपनाया है। इसका स्पष्ट उदाहरण विवाह संस्कार से जाना जा सकता है। लव और अरेंज मैरिज के बारे में समाज का युवा वर्ग क्या सोच रखता है, उसे कितना सही और कितना उचित मानता है इस संबंध में श्री माहेश्वरी टाईम्स ने जब युवाओं से चर्चा की तो बहुत रोचक और प्रभावी तथ्य व विचार सामने आए।

■ गोपिका मंत्री, खण्डवा

क्या सोचते हैं युवा

प्रेम और पारंपरिक (अरेंज) विवाह के बारे में

एम.टेक कर रहे अमित नागौरी ने इस बारे में खुलकर अपनी बात कही। उन्होंने कहा समाज का उद्देश्य विकास और संस्कार देना है। विकास हम अपने व्यवहार से कर रहे हैं और संस्कार भी हमें समाज से मिल रहे हैं। इसी के कारण अपने मूल्यों और संस्कारों का ध्यान रखते हुए अरेंज मैरिज ही की जाना चाहिए। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि समाज और परिवार में कड़ी जुड़ती जाती है। वहीं बी.एस.सी.की छात्रा शिल्पा खुलकर कहती हैं कि विवाह का आधार प्रेम होता है और बिना प्रेम के विवाह नहीं किया जा सकता। इसलिए प्रेम विवाह करने में कोई बुराई नहीं है। आज समाज को भी यह बात माननी पड़ेगी कि विकास और प्रगति बिना विचारों में बदलाव के नहीं की जा सकती। जब हमने नागपुर की एक कंपनी में बड़े ओहदे पर कार्यरत सुशील मानधन्या जो अभी बैचलर हैं से इस बारे में बात की तो उनका कहना था कि हमारा समाज जागरूक है। वर्तमान दौर में तो प्रेम और अरेंज मैरिज जैसी बातों को सोचने के लिए वक्त ही नहीं है। पर उन्होंने भी प्रेम विवाह को करने और समाज द्वारा उसे अपनाने में कोई बुराई नहीं बताई।

सी.ए.कर चुकी राखी लाहोटी का कहना है अरेंज मैरिज ज्यादा अच्छी होती है क्योंकि वे हमारे पेरेंट्स तय करते हैं और रही बात प्यार की तो शादी के बाद भी प्यार हो जाता है। इंदौर के शुभम बियाणी के इस बारे में कुछ अलग विचार हैं। वे कहते हैं- 'मैं तो अपनी पंसद से ही शादी करने में यकीन रखता हूँ पर अपने परिवार के खिलाफ नहीं। प्रेम को अरेंज मैरिज में बदलकर मैं और मेरा परिवार दोनों खुश रह सकते हैं।'

इन चर्चाओं के बाद एक बात स्पष्ट नजर आती है की युवाओं में प्रेम विवाह के प्रति जितना रुझान है उतना ही वे अरेंज मैरिज के बारे में भी सोच रहे हैं। इनके अलावा भी अन्य युवाओं से चर्चा में एक बात और स्पष्ट हुई की समाज का युवा वर्ग विकास की दौड़ में लगातार भाग तो रहा है पर अपने संस्कारों, नैतिक मूल्यों को नहीं भूलना चाहता है।

प्यार, परिवार, पैसा और प्रसिद्धि के पीछे भागती इस दुनिया में माहेश्वरी समाज का युवा वर्ग आज भी अपने परिवार और उनके प्यार को प्राथमिकता देता है। निष्कर्ष इस चर्चा से तो यह भी निकलता है कि युवाओं के पास हर समस्या का हल उपलब्ध है। अधिकतर कहते हैं कि प्रेम विवाह अपने परिवार की मर्जी से किया जाए तो ज्यादा अच्छा है और आजकल तो युवा अपने माँ-बाप, परिवार से इतने खुले होते हैं कि उन्हें इसे अपने परिवार से छुपाने की कोई जरूरत नहीं होती और परिवार भी प्रेम विवाह को ससम्मान अपना लेता है।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु...

सप्तपदी

■ ब्रजबाला कांसट, कोटा

परमात्मा की सबसे अच्छी कृति है स्त्री और पुरुष। परमात्मा ने इन्हें पूर्ण बनाया लेकिन कुछ कमी भी छोड़ी। विवाह से पूरी होती है एक-दूसरे की अपूर्णता। विवाह है मिलन, दो आत्माओं का, दो परिवारों का। सच कहा है भारतीय मनीषियों ने- साफ-सुथरी गृहस्थी होती है वैसी, जैसी किसी योगी की समाधि। दुनियाभर ने विवाह को भोग माना, हमने इसे योग माना। दुनिया इसे आयोजन मानती है हमने, हमारी संस्कृति ने परमात्मा का प्रसाद माना। ऐसा प्रसाद जो भोलेनाथ शंकर को श्रीराम ने दिया, सीताजी को माँ पार्वती ने दिया था.. मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु... इसी प्रसाद को हम नमन करते हैं विवाह की वेदी पर...।

विवाह-एक ऐसी व्यवस्था है जिसे मानव समाज ने जिसे सबसे महत्वपूर्ण माना। फारसी शब्द 'शाद' से बनी शादी। शाद यानी खुशी। शादी, खुशियों की वह बारात है जिसे हम बुलाते हैं, जिसे हम ले जाते हैं। विवाह में समाया है निर्वहण शब्द। निर्वहण में समाया है निबाहना अर्थात वहन करना। निबाहना, परिवार और समाज की नई जिम्मेदारी को। चर्चा आती है महाभारत में- 'एक समय ऐसा भी रहा, जब कोई व्यवस्थित रिश्ता नहीं था स्त्री और पुरुष के बीच। मान लिया गया था कि सभी स्त्रियाँ, सभी पुरुषों की पत्नियाँ हैं।' उस समय थे एक जागरूक सामाजिक व्यक्ति श्वेत केतु। अव्यवस्था माना उन्होंने इसे। तब उन्होंने दिया इसे एक नया व्यवस्थित रूप, सौंदर्य। वहीं से हुई आज की कुटुम्ब व्यवस्था की शुरुआत। कुटुम्ब और गृहस्थी ऐसे दर्शन (फिलॉसफी) हैं जो दुनिया में किसी के पास नहीं। यह मौलिक स्थिति, मौलिक चिंतन, मौलिक शाद है, सिर्फ भारतीय संस्कृति के पास। चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष होते हैं केवल गृहस्थी में। विवाह है, एक महत्वपूर्ण संस्कार हमारी संस्कृति के सौलह संस्कारों में। लेकिन विवाह मात्र संस्कार ही नहीं एक बहुत बड़ा उद्देश्य भी है। उद्देश्य है राष्ट्र को, समाज को, परिवार को लायक संतान देने का।

फेरे/सप्तपदी -

वर-वधू के फेरे पड़े,
योग भोग संयोग।
सप्तपदी का अर्थ है,
सात जनम का योग।।

शास्त्र कहते हैं चार फेरे लेकिन लोक परंपरा में सात फेरे माने जाते हैं। दोनों स्वीकार्य हैं। शास्त्र के अनुसार ये चार फेरे चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के हैं। पहले तीन फेरे में वधू आगे और वर पीछे होता है। यानी पहले तीन पुरुषार्थ स्त्री के मार्गदर्शन में पूरे होते हैं। मोक्ष में पुरुष आगे आ जाता है और स्त्री उसकी अनुगामिनी हो जाती है। ये फेरे यज्ञ भगवान के समक्ष इसलिए होते हैं कि यह शपथ ली जा रही है कि हम लोग अब एक महान धर्म बंधन में बंध गए हैं। हम प्रण करते हैं कि इसे सफलतापूर्वक निबाहेंगे।

सप्तपदी - फेरों के बाद वर-वधू एक साथ कदम से कदम मिलाकर सात बार चलते हैं। इसे सप्तपदी कहते हैं। चावल की सात ढेरी या कलावा बांधे सकोरे रखे होते हैं। इनको पैर लगाते दोनों एक-एक कदम आगे बढ़ते हैं। हर कदम के साथ एक मंत्र बोला जाता है।

पहला कदम- अन्न के लिए

ॐ एको विष्णुर्जगत्सर्वं व्याप्तं येन चराचरम्।
हृदये यस्ततो यस्य तस्य साक्षी प्रदीयताम्।।

गृहस्थ में आहार की सात्विकता का ध्यान रखा जाए। अन्न स्वास्थ्यवर्धक रहे। अन्न का उत्पादन, रक्षा और सदुपयोग गृहस्थ का धर्म है।

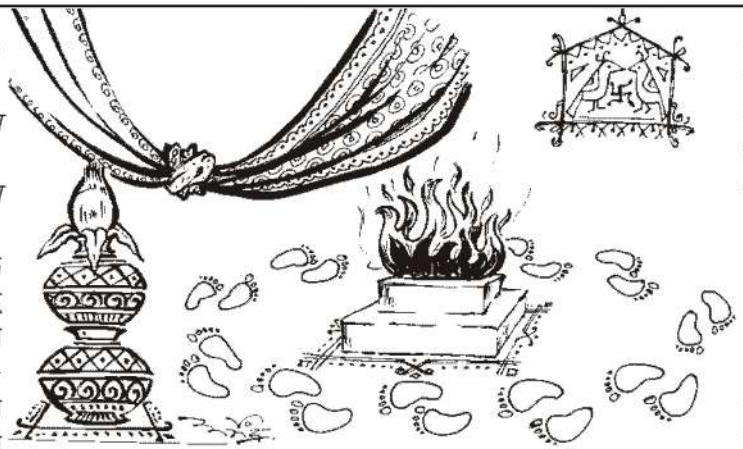

दूसरा कदम - बल-बुद्धि के लिए

ॐ जीवात्मर परमात्मा च
पृथिवी आकाशमेव च।
सूर्यचंद्रद्वयोर्मध्ये तस्य
साक्षी प्रदीयताम्।।

यह कदम शारीरिक और मानसिक बल के लिए है। व्यायाम, उचित परिश्रम, नियमित आहार-विहार से शरीर का बल बना रहता है। अध्ययन एवं विचार-विमर्श से मनोबल बढ़ता है। हम ऐसे ही उपाय करेंगे, जिससे दोनों का बल बढ़ेगा।

तीसरा कदम - धन के लिए

ॐ त्रिगुणश्च त्रिदेवाश्च त्रिशक्तिः सत्परायणाः।
लोकत्रये त्रिसंध्यायाः तस्य साक्षी प्रदीयताम्।।

फिजूलखर्ची गृहस्थी के लिए नुकसानकारक है। घर की अर्थव्यवस्था भी बजट के अनुसार चले। पति-पत्नी दोनों ही आय के साधन जुटाएं। धन का सदुपयोग किया जाए।

चौथा कदम - सुख के लिए

ॐ चतुर्मुखस्ततो ब्रह्मा चत्वारो वेदसंभवाः।
चतुर्युगाः प्रवर्तन्ते तेषां साक्षी प्रदीयताम्।।

पति-पत्नी दोनों प्रसन्नचित्त रहें, इसी में परिवार का सुख है। संतोषी सदा सुखी की नीति अपनाएं। विश्राम, मनोरंजन, विनोद, हास-परिहास का वातावरण घर में बना रहे। ऐसे दोनों के प्रयास रहें।

पांचवां कदम - प्रजा पालन के लिए

ॐ पंच में पंच भूतानां
पंचप्राणैः परायणाः।
तत्र दर्शन पुण्यानां साक्षिणः
प्राणपंचधा।।

घर के मुखिया के लिए सभी सदस्य प्रजा समान है। अपने आश्रितों की समुचित देखभाल करना चाहिए।

छठा कदम- ऋतुचर्या के लिए

ॐ पष्ठे पष्ठऋतूणां च षण्मुखः स्वामिकार्तिकः।
षड्रसाः यत्र जायंते कार्तिकेयाश्च साक्षिणः।।

दाम्पत्य जीवन में संतान पैदा करना एक सात्विक कर्तव्य है। सहजीवन को वासनाओं से मुक्त रख, संयम का पालन स्वयं के तथा संतानों के हित में करें।

सातवां कदम-मित्रता के लिए

ॐ सप्तमे सागराश्चैव सप्तद्वीपाः सपर्वताः।
येषां सप्तषिपत्नीनां तेषामादर्श साक्षिणः।।

हम दोनों पति-पत्नी इस बात का ध्यान रखेंगे कि हमारे द्वारा एक-दूसरे के सखाभाव पर आघात न हो। सबके प्रति हम सद्भाव रखेंगे।

FROM LAST ELEVEN YEARS IN COURIER LINE

1 COURIER

One-day Courier Servieces

Require Agency- For All M.P. to Maharashtra Booking
Contact with details

MANOJ BIRLA

Head Office
57/58 Mahatma Gandhi Market
1st Floor Jalgaon 425001
Phone 0257-2220313 3098984
Email- birla-jal @ Sancharnet. in

Indore Office
23/24 Murai Mohalla
Chhawni Indore
Phone 0731/3947946